ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

कार्तिक २०८१ नवम्बर २०२४

₹ ३०

कविता

उल्टा-पुल्टा

– भगवती प्रसाद द्विवेदी

चलते-चलते निचली छत से
गिरती जब छिपकली छपाक,
तुरंत संभल जाती उस क्षण ही
उठ चल देती अपने आप।

ऊपर की डाली से बंदर
जब आ गिरता है नीचे,
झटपट पकड़ दूसरी डाली
हँसता है आँखें मींचें।

तिलचट्टे, चींटे जब चलते
एकाएक पलट जाते हैं,
झटक हाथ-पैरों को अपने
फिर सीधे हों चल पातें हैं।

चींटी गिरती, मकड़े गिरते
गिरगिट गिरते और सँभलते,
गिरने पर वे साहस खोकर
कभी न अपनी आँखें मलते।

गिरने और पिछड़ने पर
जो हिम्मत खोते, पछताते हैं,
धूल झाड़ जो तुरंत संभलते
वे जीवन में सुख पाते हैं।

– पटना (बिहार)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

कार्तिक २०८१ ▪ वर्ष ४५
नवम्बर २०२४ ▪ अंक ०५

संरक्षक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

२६ नवम्बर को हमारे देश का संविधान दिवस है। संविधान का नाम सुनते ही सामान्यत: हमें एक ऐसी पुस्तक का स्मरण आता है जिसमें भारत के नागरिकों के लिए स्वतंत्र भारत में रहते हुए अपने लोकतंत्र को सुचारू चलाने के नीति–नियमों, कर्त्तव्यों व अधिकारों का विवरण अंकित है। प्राय: संविधान निर्माता पूज्य बाबासाहेब आम्बेडकर की मूर्ति या चित्र में यह पुस्तक हमें दिखाई देती है।

कभी–कभी आपके मन में आता होगा यह पुस्तक तो बड़ों के काम की है। इसका बच्चों से क्या लेना–देना? इसलिए इस गलत सोच को ठीक करने के लिए हमें यह जानना चाहिए कि संविधान समस्त नागरिकों के लिए उनके कर्त्तव्य और अधिकारों का बोध कराने वाली आचरण संहिता है। तब आप सब बच्चे जो इस देश के भावी नागरिक हैं, भविष्य हैं उन्हें भी अपने कर्त्तव्यों समझने एवं अधिकारों को प्राप्त करने और पालन करने का स्वभाव बचपन से ही ढालना होगा।

अनेक बार बच्चों द्वारा नियमों के उल्लंघन को 'बच्चे हैं' कहकर अनदेखा कर दिया जाता है। लेकिन यातायात नियम, सार्वजनिक संपत्ति जैसे रेल, बस, सड़क, उद्यान आदि की सुरक्षा व सदुपयोग, स्वच्छता एवं किसी भी संस्थान के नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना, कहीं पंक्ति लगाना आवश्यक है तो पंक्ति न तोड़ना, किसी सुविधा का शुल्क है तो उसे अवश्य देना आदि ऐसे अभ्यास हैं जो हमें बड़े होने पर भी अच्छे नागरिक बनकर संविधान की रक्षा के लिए समर्थ व श्रद्धालु बनाते हैं।

एक बात और संविधान तो कर्त्तव्य और अधिकार दोनों ही बताता है किन्तु हमें अच्छे नागरिक तभी माना जाएगा जब हम अधिकारों से भी अधिक कर्त्तव्यों को जानेंगे, मानेंगे पालन करेंगे। जब कोई अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करता है तो दूसरे के अधिकार स्वयं सुरक्षित हो जाते हैं, उन्हें छीनने की या माँगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

इसलिए मेरा आग्रह है बचपन से ही संविधान का सम्मान करने का संस्कार बनाएँ। आपके बालपन में राष्ट्र का भविष्य मुस्कुराता है। बड़े होकर एक कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने के लिए आप अभी से प्रयास करें तो भारतमाता के लिए इससे अधिक आनंद की बात और कुछ नहीं हो सकती।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- अनुशासन का कैंप -सुधा दुबे ०५
- अधूरी अभिलाषा -मुग्धा पाण्डे १८
- पीले फूलों का चोर -रोचिका अरुण शर्मा ३०
- तारे कहाँ गए? -शिखरचन्द जैन ४०

छोटी कहानी

- हार में छिपी जीत -तरुण कुमार दाधीच ३८
- हममें भी जीवन है -टीकमचन्दर ढोडरिया ४६

शिशु कथा

- चप्पलें बोली धन्यवाद! -सुरेश सौरभ ४४

आलेख

- पंचतन्त्र की कथाएँ -शिवम सिंह २६
- बाल अधिकारों की..... -मीरा जैन ३४

बौद्धिक क्रीडा

- पहेलियाँ -डॉ.अलका जैन'आराधना' १४
- भूल-भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १४

संस्मरण

- वृन्दा पहुँची अपने घर -डॉ. विकास दवे ०८

कविता

- उल्टा-पुल्टा -भगवती प्रसाद द्विवेदी ०२
- बचपन की बरबादी -भाऊराव महन्त १६
- पेड़ अगर चलते फिरते.. -शैलेन्द्र सरस्वती २४
- आओ नाव बनाना सीखें -पंकज जुगनू ३९
- खेल-खिलौने -डॉ. अलका अग्रवाल ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १०
- आपकी पाती - २१
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल २२
- लोकमाता अहिल्याबाई होळकर -अरविन्द जवळेकर २८
- मैं संघ हूँ -नारायण चौहान ३२
- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक ३३
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३६
- पुस्तक परिचय - ४३
- विज्ञान व्यंग -संकेत गोस्वामी ४५
- छः अँगुल मुस्कान ४७
- स्वास्थ्य -डॉ. मनोहर भण्डारी ४९

विज्ञान गल्प

- पानी -वैभव कोठारी २०

चित्रकथा

- दस रुपए का लाभ -संकेत गोस्वामी १३
- फैसला -देवांशु वत्स २५
- नींद आ रही है -देवांशु वत्स ४३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी–७ नवम्बर बालचर स्थापना दिवस

अनुशासन का कैंप

– सुधा दुबे

आज अर्पण बहुत प्रसन्न था। वह आज स्काउट (बालचर) के कैंप में गांधीनगर जा रहा था। माँ ने उसकी सारी वर्दी तैयार कर उसके बैग में रख दी थी। ग्रे कलर की कमीज, नेकर ब्लू कलर, का बैरेट कैप बेल्ट, स्कार्फ, गोगल और त्रिदल फूल स्काउट का चिन्ह, काले रंग के मोजे और जूते और स्काउट का धातु का बैच और ग्रे कलर की सीटी वाली डोरी भी उसके साथ लगी थी। एक वर्दी उसने पहनने के लिए निकाली थी एक अतिरिक्त बेग में रख ली थी उसने नहा–धोकर वर्दी पहनी और हँसकर बोला– ''माँ मैं कितना स्मार्ट लग रहा हूँ ना?''

''हाँ बेटा! बहुत सुंदर लग रहे हो ऐसा लग रहा है जैसे तुम सेना में भर्ती होने जा रहे हो।''

''हाँ माँ! मैं बड़ा होकर अवश्य पिताजी की तरह सेना में भर्ती हो जाऊँगा।''

''अवश्य बेटा! यदि अभी से नियम और अनुशासन का पालन करोगे अवश्य उन्नति करोगे।''

''हाँ माँ मैं कोई शैतानी नहीं करूँगा और कैम्प में जो भी सिखाएँगे वह अच्छी तरह से सीख कर आऊँगा।''

''मेरा प्यारा बेटा राज दुलारा।''

माँ ने अपने बेटे को प्यार से गले लगा लिया।

शाला की बस जैसे ही आकर दरवाजे पर खड़ी हुई माँ को उसने बीच की तीन अँगुलियों को जोड़कर सैल्यूट (सैनिक प्रणाम) किया और मुस्कुराते हुए बस में बैठ गया। शाला पहुँचकर अपने स्काउट कैप्टन को सैल्यूट किया।

''जय हिंद सर!''

''अरे वाह अर्पण! तैयार होकर समय पर आ गए।''

''हाँ सर! आज कैंप में जाना है ना।''

''हाँ... बिल्कुल सब तैयारी है चलने की?''

''जी सर!''

सारे बच्चे मैदान में खड़े थे अर्पण भी वहाँ जाकर सबके साथ खड़ा हो गया।

''चलो सब बच्चे पंक्ति बनाकर खड़े हो जाओ तुम्हारा दीक्षा के पश्चात प्रथम सोपान हो गया है। आज मैं अभी तुमको जाने के पहले प्रतिज्ञा याद दिलवा देता हूँ। स्काउट/गाइड के नियम भी पालन करना।

''यस सर!'' सभी बच्चे जोर से बोले।

स्काउट मास्टर मदन सर ने उन्हें प्रतिज्ञा दिलाई, सब बच्चे हाथ आगे कर लो और मेरे साथ दुहराओगे.... ''मैं (अपना नाम) मर्यादा पूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ, कि मैं यथाशक्ति ईश्वर अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करूँगा।''

''दूसरों की सहायता करूँगा।''

''स्काउट नियम का पालन करूँगा।''

सभी बच्चों ने उनकी प्रतिज्ञा को दोहराया और अपना हाथ नीचे कर लिया।

''देखो बच्चो! आज हम कैंप में जा रहे हैं न? तो हमें गाइड के नियम भी ज्ञात होना चाहिए।''

''वह क्या सर! नियम कौन–कौन से हैं?'' सब बच्चे एक साथ बोले।

''देखो सभी के लिए स्काउट और गाइड आपस में मित्र होते हैं एक–दूसरे के लिए भाई–बहन होते हैं।''

''स्काउट गाइड विनम्र होते हैं।''

''स्काउट गाइड जानवरों के मित्र होते हैं और प्रकृति से प्यार करते हैं।''

''स्काउट गाइड अनुशासित होते हैं और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करते हैं।''

''सर! सार्वजनिक संपत्ति कौन–सी होती है?''

''जो संपत्ति सबके लिए होती है और जिसका

निर्माण सरकार करती है जैसे शाला, कॉलेज, बगीचे और सड़क इत्यादि।''

''स्काउट को कैंप में इन सब नियमों का पालन करना है।''

''जी सर! अवश्य।''

सभी ३२ स्काउट का दल गणवेश पहनकर बहुत व्यवस्थित लग रहा था। बस में बैठकर दल गाँधीनगर कैंप स्थल के लिए रवाना हो गया। रास्ते में हवाई जहाज को उड़ता देखकर सब बच्चे प्रसन्न हो रहे थे। तो मदन कैप्टन सर ने बताया कि– ''देखो बच्चो! यह हमारा राजा भोज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है।''

''अच्छा सर! यह अंतरराष्ट्रीय है?''

सर ने हाँ में गर्दन हिलाई।

आसमान में उड़ते हुए हवाई जहाज को देखकर बच्चों ने जमकर तालियाँ बजाईं सब लोग गाते–बजाते गांधीनगर कैंप स्थल पर पहुँच गए थे। सबने रजिस्ट्रेशन फॉर्म भरा और अपना सामान उठाकर निर्धारित किए गए कैंप स्थल में टेंट की ओर चले, टेंट में अपना सामान व्यवस्थित रखा एक टेंट में आठ बच्चे ठहरे हुए थे। सभी को भोजन स्थल शौचालय और कक्षा का स्थान दिखाया गया। जो कि बच्चों को यह समझा दिया गया था कि यह मैदान हैं यहाँ आस–पास कीड़े–मकोड़े साँप वगैरा घूमते रहते हैं। अपने–अपने टेंट को व्यवस्थित पैक कर लेना और डरना नहीं। डर तो लगा पर सर ने समझा दिया था कि यदि हम जानवरों को नहीं सताएँगे तो वह भी हमें नहीं परेशान करेंगे। सभी बच्चे भोजन कर अपने–अपने टेंट में व्यवस्थित सो गए।

दूसरे दिन से ५:३० सुबह से गीत बजने लगा।

''उठ जाग मुसाफिर भोर भई....।''

साथ में जोरदार सीटी की आवाज से सब कुलबुलाने लगे कुछ उठ गए और कुछ आँखें मलते हुए बिस्तर पर बैठे रह गए, पर अनुशासन की प्रतिज्ञा ली थी अत: उठ बैठे।

सब बच्चे उठकर दातुन आदि कर नित्य क्रिया से निपट कर व्यायाम करने के लिए मैदान में पंक्ति बद्ध हो गए थे। कैप्टन ने पूरे दल को समझाया कि कैंप में कोई भी अनुशासन नहीं तोड़ेगा जो नियम आपको बताए गए हैं उनका हमेशा ध्यान रखेंगे। मोहन को जल्दी उठने की आदत नहीं थी और इतनी जल्दी वह नित्य क्रिया करके मैदान पर नहीं आया और जब वह पहुँचा तो कैप्टन सर ने उससे मैदान के दो चक्कर लगवाए, वह थक कर चूर हो गया था उसने सर से माफी माँगी और अपने दल के साथ व्यायाम करने लगा। ८.३० पर फ्लैग होस्टिंग और सफाई का कार्यक्रम था सभी बच्चे फ्लैग होस्टिंग के स्थान पर पँक्ति बनकर खड़े हुए और सबने मिलकर अनुशासन के साथ गीत गाया... प्रार्थना गीत।

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना...

उसके पश्चात् ध्वजारोहण और झंडा गीत–

भारत स्काउट/गाइड झँडा ऊँचा सदा रहेगा।

नाश्ता कर वह सभी विभिन्न कक्षाओं में बँट गए थे कहीं फर्स्ट एड की कक्षा चल रही थी और कहीं सेवाकार्य, सेवाकार्य में सभी ने मिलकर मैदान की

सफाई की और उसके पश्चात विभिन्न प्रकार की गठानें/नॉट बाँधना सीखा। अर्पण ने पट्टियाँ बाँधना, कोहनी की, अँगुली की पट्टी किस प्रकार बाँधी जाती है वह सीखा। दोपहर का भोजन करने में क्योंकि सभी बच्चे बहुत थक गए थे। पँक्ति बनाकर सबने अपनी-अपनी थालियों में भोजन परोसा और पालथी मारकर सबने 'भोजन मंत्र' ऊँ सह नाववतु। सह नो भुनक्तु।

सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु।
मा विद्विषावहै।। ऊँ शांति: शांति: शांति:।

गाया और फिर भगवान को हाथ जोड़कर भोजन आरंभ किया। किसी ने भी अपनी थाली में झूठा नहीं छोड़ा था। आवश्यकता के अनुसार ही लिया था। विवेकानंद टीम की खाना बाँटने में ड्यूटी लगी हुई थी। उसने सभी बच्चों को खाना बाँट कर फिर अपना खाना परोसा और खाने बैठे। कोई भी बच्चा नियम नहीं तोड़ रहा था। दोपहर में भोजन करने के पश्चात एक घंटा विश्राम किया और संध्या को फिर कुछ खेल खिलाए गए।

सामूहिक खेल जिसमें बॉस्केटबॉल और टीम भावना विकसित करने के लिए कबड्डी तथा खो-खो

भी सभी बच्चों ने कैंप फायर के लिए लकड़ियाँ एकत्रित की और सूखी लकड़ियाँ एक स्थान पर जमा की फिर उन्हें टास्क दी गई और अलग-अलग प्लाटून ने किसी ने नाटक किसी ने सांस्कृतिक गीत किसी ने डाँस किया और कैंप फायर करते आग के आसपास नाचते गाते रहे। राघवेंद्र ने गुजराती गरबा गीत गाकर अकेले ही डंडों के सहारे प्रस्तुति दी कमलेश मराठी साड़ी बाँधकर लावणी प्रस्तुत कर रहा था उससे संभल नहीं रही थी, सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो रहे थे। अर्पण ने गोंडी नृत्य किया थाली को उन्होंने ढोलक बना लिया था और सभी मिलकर नाच गा रहे थे। सभी कार्यक्रम बहुत अनुशासन से चल रहा था। बच्चों को गाँधीनगर कैंप में आकर बहुत मजा आया। कैंप इंचार्ज संजू सर ने आकर पूछा- ''बच्चो! कैसा लग रहा है?'' सब जोर से बोले- ''अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा।'' सब खिल-खिलाकर हँस पड़े। ''सर! आप भी हमारे साथ डाँस करिए न।'' सर ने खूब मजेदार नृत्य किया।

''बहुत आनंद आ रहा है सर!''

कैंप इंचार्ज संजू सर बोले- ''इसी प्रकार हम कैंप में रहकर छोटे-छोटे नियमों का पालन कर अनुशासन सीखते हैं और यह अनुशासन हमें उम्रभर काम आता है।'' तीन दिन कैंप में कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। अंतिम दिन सांस्कृतिक प्रोग्राम की प्रस्तुति दी गई और हस्तकला की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

पासिंग आउट परेड में अर्पण का दल प्रथम आया और उन्हें प्रमाण-पत्र भी दिया गया। सर्वोत्तम टेंट व्यवस्था एवं स्वच्छता में विवेकानंद दल सबसे आगे रहा। इस प्रकार बच्चे अपने आप अपना काम करना भी सीख गए और उनमें जिम्मेदारी और अनुशासन की भावना भी जाग्रत हुई। अंतिम विदाई लेते समय सबकी आँखों में आँसू थे सब एक-दूसरे के गले मिलकर रो रहे थे। फिर मिलते हैं अगले इंटीग्रेशन कैंप में। हाथ मिलाते हुए सब अपनी-अपनी बस में बैठ गए। **- भोपाल (म. प्र.)**

वृन्दा पहुँची अपने घर

– डॉ. विकास दवे

यह अनुभव लिखते समय मन अत्यंत भावुक हो रहा है। हम साहित्य वाले कई बार अपने उद्‌बोधन में भारतीय संस्कृति की उदात्तता की चर्चा करते हुए अघाते नहीं किन्तु उसका दर्शन कब कहाँ हो जाएगा यह हमें भी कल्पना नहीं रहती?

कल रात्रि वल्लभ भवन में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सुश्री कविता शिरोल जी की दो पुस्तकों 'उजास की ओर' तथा 'कविता जागती है' के विमोचन से मैं वापस लौट रहा था।

दुष्यंत कुमार पांडुलिपि संग्रहालय के निकट ही बस स्टॉप के पास एक भोजनालय पर कई बार मैं भोजन करने के लिए जाता हूँ। विशेषकर संध्या समय जब बहुत अधिक भूख नहीं होती, विलंब हो गया हो और कुछ हल्का–फुल्का खाने का मन करता है तो अवश्य जाता हूँ क्योंकि उस भोजनालय पर खिचड़ी बहुत अच्छी बनती है।

चूँकि कार्यक्रम से लौटते हुए विलंब हो गया था इसलिए सोचा यहीं पर खिचड़ी खाते हुए चलता हूँ। स्वाभाविक रूप से अपने दो पहिया वाहन को जब मैंने पॉर्किंग में लगाया तो कार्यक्रम से भेंट में मिला हुआ पौधा जो एक सुंदर से गमले में लगा था, को भी अपने साथ होटल के अंदर लेता गया।

उस गमले को मैंने सहज भाव से अपनी टेबल पर रख लिया और खिचड़ी बुलवा ली। मैं जब खिचड़ी खा रहा था तो उस होटल में अंदर की ओर भोजन बनाने वाले स्थान से एक बहन निकल कर आई और अत्यंत जिज्ञासा से मुझे पूछने लगी– ''यह तुलसी माता आपको कितने में मिली है?''

पहले तो मैं समझ नहीं पाया कि वह पूछना क्या चाहती हैं? फिर ध्यान आया कि उस सुंदर से गमले में लगी तुलसी माता का वह पौधा मैं कितनी राशि में क्रय करके लाया हूँ यह उनकी जिज्ञासा का भाव था।

मैंने धीरे से कहा– ''यह खरीद कर नहीं लाया हूँ मुझे अपनी एक बहिन ने भेंट में दिया है।''

वे तुरंत बोलीं– ''ऐसी तुलसी माता मैंने वर्षों से नहीं देखी। कितने बड़े–बड़े पत्ते हैं और एकदम निरोगी माता....।''

ऐसा कहकर उन्होंने उस गमले को हाथ लगाकर माथे पर स्पर्श किया और वापस परदे लगे हुए भोजन बनाने के निर्माण स्थल की ओर चली गई। सामान्यतया उस होटल में भोजन निर्माण करने वाले स्टाफ का भोजन वितरण होने वाले स्थान जहाँ पर ग्राहक बैठे होते हैं आना कम ही होता होगा इसलिए भोजन वितरण करने वाले स्टाफ के लोग एक अलग प्रकार की दृष्टि से उस

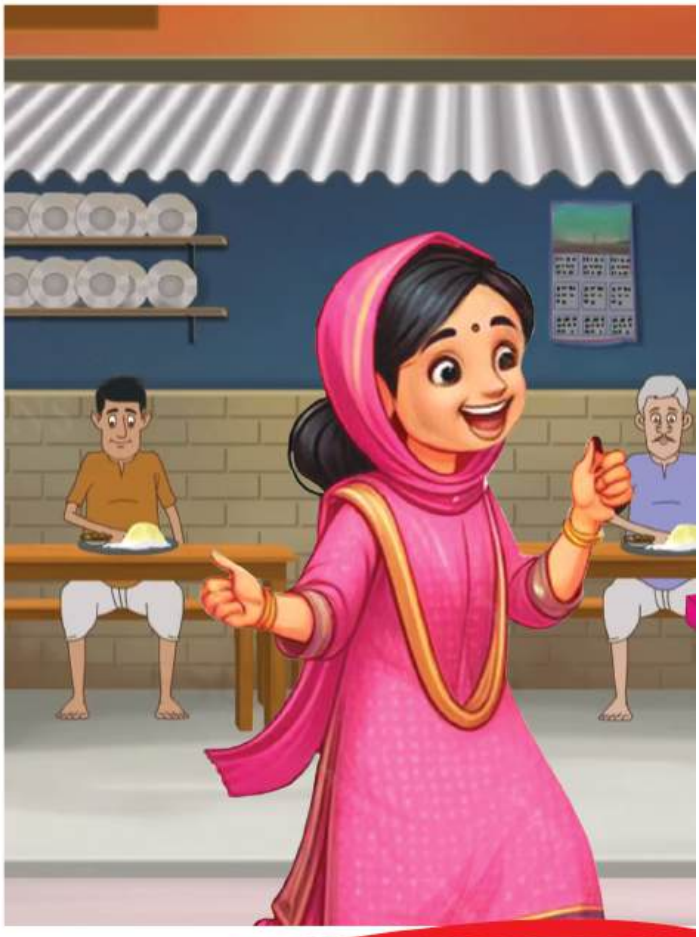

बहन को देखने लगे थे। उस कठोर दृष्टि को मैंने भी अनुभव किया। भोजन समाप्त कर होटल मालिक को मैंने बिल का भुगतान किया और धीरे से उनसे कहा कि– ''मैं आपके यहाँ भोजन निर्माण करने में एक बहन काम करती हैं क्या आप उनको बाहर बुला सकते हैं?''

पहले तो उनको समझ नहीं आया कि मैं कहना क्या चाहता हूँ शायद उस बहन के उस सीमोल्लंघन से नाराज हूँ किन्तु उन्होंने भोजन वितरण करने वाले एक व्यक्ति से कहा– ''जाकर उसको बुला लो।''

वह बहन होटल के काउंटर तक ससंकोच आ गईं। इस पूरी प्रक्रिया में भोजन करने वाले सब लोगों के ध्यानाकर्षण का केंद्र वह बहिन और मैं बन चुके थे। मैंने धीरे से उन बहन से कहा– ''आपने जितनी आत्मीयता से तुलसी माता को निहारा और चरण स्पर्श किया, मुझे लगता है कि यह वृंदा अब मेरे घर जाने के बजाय आपके घर जाना चाहिए। आपके घर से अधिक अच्छा स्थान इन तुलसी माता के लिए और कोई नहीं हो सकता।''

ऐसा कहते हुए मैंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ तुलसी का गमला उनकी ओर बढ़ा दिया। अब मेरे सामने असली भारत प्रकट हुआ।

साहित्य अकादमी का निदेशक जूते पहने अपने स्टेटस के साथ गमला दे रहा था और उस बहिन ने अत्यंत श्रद्धा के साथ अपने पैरों में पहनी हुई चप्पल एक ओर उतारी, अपनी साड़ी का पल्लू माथे पर रखा और उसके बाद तुलसी माता के गमले को अपने हाथों में ले लिया। माथे पर स्पर्श करते हुए उस बहिन की आँखों से भीगे हुए आँसुओं का बहना मैं देख रहा था।

सच कहूँ अब तक सैकड़ों कार्यक्रमों में मुझे बहुत सुंदर–सुंदर गमले और पौधे भेंट में मिले हैं किन्तु पहली बार वृन्दा को अपने घर जाते देखना मेरे लिए किसी तुलसी विवाह को संपन्न करने से बड़ा अनुभव था। यूँ लग रहा था बेटी की तरह वृन्दा को विदा कर रहा हूँ।

सचमुच भारत की आत्मा के दर्शन यदि साहित्य जगत के लोग कर सकें और वामपंथियों के तैयार किए हुए भ्रमजाल से बाहर निकल सकें कि धर्म अफीम की गोली है तो मुझे लगता है यह साहित्य जगत के लिए एक बड़ा अवदान हो जाएगा।

आपने विदेशी विचार की पर्यावरण चेतना तो ले ली पर वह संवेदना त्याग दी जो भारत के मन में बसती थी। कविता शिरोल जी से मैं क्षमा याचना कर रहा हूँ कि उनकी भेंट को अपने पास नहीं रख पाया किन्तु मुझे इस बात की गौरवानुभूति है कि वह भेंट सही हाथों में और सही घर तक पहुँच गई है।

आभार कविता शिरोले जी का भी और उससे बढ़कर आभार मेरी उस अज्ञात बहिन का जिनका मुझे नाम भी नहीं पता पर हाँ, मुझे पता है उस बहिन में साक्षात भारत माता के दर्शन मैंने अपनी आँखों से किए हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

शिवकुमार गोयल

जिनके बाल साहित्य में थी संस्कारों की घुट्टी

प्रस्तोता
– डॉ. नागेश पाण्डेय
'संजय'

शिवकुमार गोयल

अपने मौलिक चिंतन और अनुपम सृजन से भारतीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में जीवन पर्यंत कार्य करने वाले शिवकुमार गोयल का बाल साहित्य–सृजन में भी अतुल्य योगदान है। उनके बाल साहित्य में संस्कारों की दुर्लभ घुट्टी विद्यमान है, जिसके दूरगामी प्रभाव को सदैव रेखांकित किया जाएगा।

३१ अक्टूबर १९३८ को उत्तर प्रदेश के पिलखुआ (हापुड़) में इंदिरा रानी और संत साहित्य के सुविख्यात लेखक भक्त रामशरण दास के पुत्र रूप में जन्मे शिवकुमार गोयल का साहित्य भारतीय संस्कृति के वैभव से ओतप्रोत है। पत्रकारिता के माध्यम से भी सांस्कृतिक मूल्यों के पक्षधर रहे। उन्होंने समाज को दिशावाहक साहित्य उपलब्ध कराया, साथ ही बच्चों को उत्तम संस्कारों से जोड़ने के लिए भी वे आजन्म यत्नशील रहे। 'देवपुत्र' के तो वे बहु प्रकाशित रचनाकार रहे हैं।

वर्ष १९५५ से साहित्यिक क्षेत्र में प्रवृत्त होने वाले गोयल जी ने बच्चों के लिए खूब लिखा। कहानी, कविता और जीवनी विधाओं में उनका प्रेरक साहित्य बाल साहित्य की धरोहर है। उन्होंने चार दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं। उनकी प्रमुख बाल–किशोर उपयोगी पुस्तकें हैं। 'वीर सावरकर', 'क्रांतिकारी सावरकर', 'सोने का महल', 'सबसे बड़ी जीत', 'आजादी के दीप', 'धरती चाँद सितारों की', 'माटी है बलिदान की', 'शौर्य गाथाएँ', 'भारत की वीर गाथाएँ', 'हिमालय के प्रहरी', 'शहीदों की गाथाएँ', 'जवानों की गाथाएँ', 'न्याय की कहानियाँ', 'आजादी के दीप', '२२२ शिक्षाप्रद बोध कथाएँ', '२०१ प्रेरक नीति कथाएँ', 'शिक्षाप्रद धर्म कथाएँ', 'कारगिल के वीर', 'शहीदों की गाथाएँ', 'जवानों की गाथाएँ' इत्यादि।

गोयल जी को उत्तम सृजन हेतु अनेक पुरस्कार–सम्मान मिले किन्तु उनका सबसे बड़ा सम्मान उनकी अद्भुत और कालजयी लेखन क्षमता है जिसके बल पर वे साहित्य जगत में दैदीप्यमान हैं। भले ही २९ अप्रैल २०१४ को वे इस नश्वर जगत से विदा हो गए किन्तु अपनी रचनाओं के माध्यम से सदा–सर्वदा के लिए अमर हैं। आइए, उनकी कुछ विशिष्ट रचनाओं का रसास्वादन करते हैं।

लो हार

दरभंगा में एक किसान रहता था। उसकी कोई संतान नहीं थी। उसने संतान के लिए भगवान शिव की आराधना की। एक रात उसे सपना आया कि उसके पुत्र हुआ है। कुछ समय बाद, सचमुच उसके घर एक सुंदर बच्चे ने जन्म लिया।

बच्चा तो जन्मा, किन्तु माँ का दूध सूख गया। बच्चे को गाय–भैंस का दूध पिलाने का प्रयत्न किया गया। किन्तु बच्चे को वह भी नहीं पचा।

बच्चा भूखा, रोता, बिलखता रहता। पूरा परिवार चिंता में डूब गया कि बिना दूध के बच्चा जीवित कैसे रहेगा?

बच्चे का पिता एक दिन खेत से घर लौट रहा था। रास्ते में एक मजदूर की झोपड़ी से महिला के रोने की आवाज सुनाई दी। उसका नन्हा बच्चा मर गया था। किसान उस समय तो घर आ गया। दूसरे दिन वह फिर उस झोपड़ी में पहुँचा। उस महिला के पति से कहा– ''मेरा पुत्र बिना दूध के भूखा बिलख रहा है। यदि आपकी पत्नी उसे पाल सके, तो बड़ी कृपा होगी। बच्चे को जीवन दान मिल जाएगा। बदले में मैं अपना एक खेत देने को तैयार हूँ।''

वह व्यक्ति भले ही मजदूरी करके पेट पालता था, किन्तु बड़ा दयालु था। बोला– ''मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि बच्चे को बिलखता देखकर माँ–बाप को कितना कष्ट होता हैं! आप बच्चे को हमारे यहाँ भेज दिया करें। यह उसे दूध पिला दिया करेगी। कभी–कभी यह आपके यहाँ भी आया–जाया करेगी।''

अब बच्चा तेजी से बड़ा होने लगा। वह बहुत मेधावी था। खेलने–पढ़ने में अव्वल रहता। वह अपनी धाय माँ के पास अधिक रहता। उसे वह 'बड़ी–माँ' पुकारता। उसकी असली माँ भी कहती– ''बेटा! तुम्हें उसी ने तो जीवन दिया है। मुझसे अधिक उसी का सम्मान करो।''

बालक का नाम 'शंकर' रखा गया। वह बचपन से ही गाना गाता, कविता लिखता। कुछ ही दिन में उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैलने लगी। उसकी कविताएँ सुनने के लिए लोग लालायित रहने लगे।

कवि शंकर मिश्र की ख्याति राज–दरबार तक जा पहुँची। दरभंगा के महाराजा स्वयं साहित्य प्रेमी विद्वान थे। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री को शंकर के घर भेजा। उसने कहा– ''हमारे महाराज दरबार में आपके मुख से कुछ सुनना चाहते हैं।'' शंकर ने कहा कि वह अभी कुछ दिन साधना में व्यस्त है। समय मिलने पर अवश्य वहाँ पहुँचेगा।

शंकर कुछ दिन बाद राज–दरबार में पहुँचा। महाराज ने उसे बहुत सम्मान दिया। ऊँचे आसन पर बैठाया। इसके बाद कहा– ''कविवर! हमें कुछ

सुनाइए।'' शंकर ने प्रभु भक्ति के गीत सुनाए। उसके सुमधुर कंठ से निकली कविताओं तथा गीतों को सुनकर, पूरा दरबार मंत्र–मुग्ध हो गया।

महाराज तथा महारानी घंटों तक शंकर के मुख से भक्ति के गीत सुनते रहे। भगवान शंकर की बारात का वर्णन सुनकर, पूरा दरबार हँसी के मारे लोट–पोट हो गया।

महाराज ने उसी समय शंकर मिश्र को 'राजकवि' की उपाधि दे दी। चलते समय उसे हीरों का हार भेंट किया। आज शंकर मिश्र बहुत प्रसन्न था। उसे लगा, उसका जीवन सार्थक हो गया।

हीरों का हार लेकर शंकर घर पहुँचा। उसने उस हार को अपनी माँ के चरणों में रख दिया। माँ की खुशी का पारावार नहीं था। वह बोलीं– ''बेटा! यह तेरी पहली कमाई है। इसे अपनी बड़ी माँ के चरणों में अर्पित कर, उसी के दूध से तेरा जीवन बचा है।''

शंकर मिश्र अपने माँ–बाप के साथ हीरों का हार लेकर झोंपड़ी में पहुँचा। उसने बड़ी माँ के चरण छुए। उस हार को उसके गले में डाल दिया। पति–पत्नी हीरों का अमूल्य हार देखते रह गए।

उन्होंने कहा– ''बेटा! हमारे घर कोई संतान नहीं है। हम मेहनत करके खूब आनंद में जी रहे हैं। हम इस बहुमूल्य हार का क्या करेंगे?''

शंकर अड़ गया। बोला– ''माँ! मैंने संकल्प किया है कि अपने जीवन की पहली कमाई तुम्हें भेंट करूँगा। इसे तुम्हें लेना ही पड़ेगा। तुम्हारे कारण ही यह मुझे मिला हैं। यदि तुम इसे नहीं लोगी, तो मुझे बहुत दु:ख होगा।

उन दिनों राज्य में सूखा पड़ रहा था। लोग बूँद–बूँद पानी के लिए तरस रहे थे।

पति–पत्नी ने उसी समय संकल्प लिया कि इस हार को बेचकर वे तालाब बनवाएँगे, जिसका मीठा पानी पीकर लोग सुख से जी सकें। दरभंगा में आज भी यह तालाब है।

दूर नशे से रहना

गीदड़ की बारात चढ़ी थी,
कल जंगल के अंदर।
बैंड बजाते चले जा रहे,
आगे–आगे बंदर।

भालू नाच रहा था खाकर–
बड़ा भाँग का गोला।
गिरा अचानक ठोकर खाकर,
गुलथुल गोलमटोला।

दौड़े सभी बराती उसको–
स्ट्रैचर पर लदवाया।
चोट लगी थी गहरी–
सीधे अस्पताल पहुँचाया।

बोला एक सयाना कव्वा–
मानो मेरा कहना।
कितनी भी हो खुशी,
नशे से सदा दूर ही रहना।

छतरी चाँद सितारों की

हम है जिस धरती के बेटे,
वह धरती अवतारों की।
इस धरती पर तनी हुई है,
छतरी चाँद सितारों की।

ऊँचे पर्वत, गहरी नदियाँ,
इनको बीत गई हैं सदियाँ।
सरदी, गरमी, वर्षा, आंधी,
हर मौसम की सीमा बांधी।

फूलों की खुशबू फैलाती,
ताजी हवा बहारों की।
सुबह सवेरे सूरज आता,
अम्बर स्वर्णिम थाल सजाता।

गंगा की यह निर्मल धारा,
इसने सबको पार उतारा।
हर मौसम खुशियाँ बिखेरता,
ले उमंग त्यौहारों की।

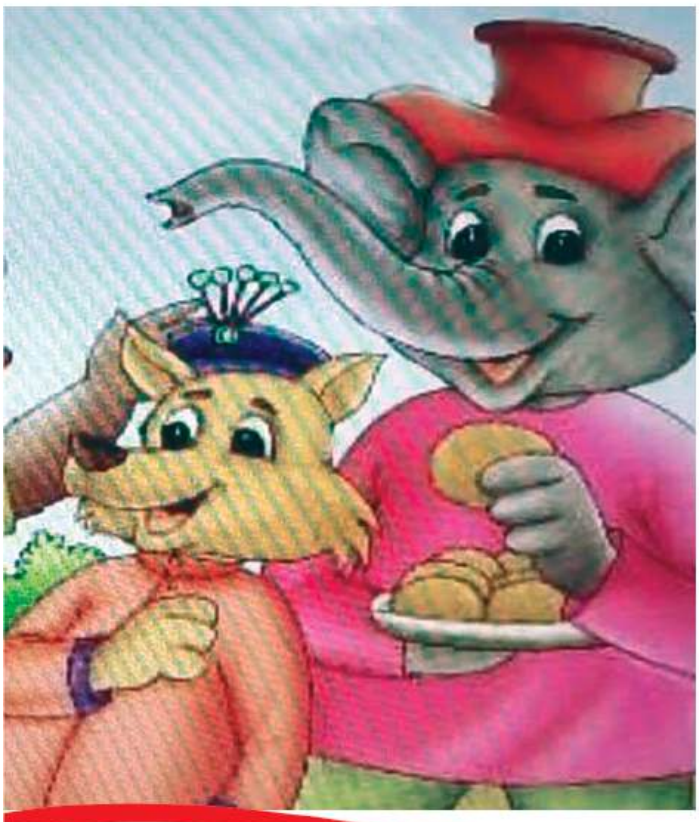

अनूठी ईमानदारी

श्रीलंका के सीलोन नगर में महता नामक व्यक्ति रहता था। वह परम ईश्वरभक्त और ईमानदार था। वह सदाचार पर अडिग रहता था। उसका एक मित्र था लरोटा। वह भी पहले काफी धनी था और उसके बाग-बगीचे थे, लेकिन इन दिनों गरीबी के दिन बिता रहा था। एक दिन महता लरोटा के बगीचे में जमीन खोदकर जड़ी-बूटी तलाश रहा था कि अचानक उसे एक घड़ा दिखाई दिया। उसमें सोने की मोहरें भरी हुई थीं।

महता ने मोहरें देखीं, किंतु उसके अंदर की सच्चाई ने लालच को पास भी फटकने नहीं दिया। उसने घड़े को मिट्टी में ही दबा दिया और लरोटा के पास पहुँचकर सूचना दी कि बगीचे में मोहरों से भरा घड़ा है। लरोटा बगीचे में पहुँचा।

मोहरें देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने महता को कुछ मोहरें पुरस्कार में देने का प्रयास किया, तो उसने यह कहकर मोहरें ठुकरा दीं कि दूसरे का धन विष के समान घातक होता है।

लरोटा ने बगीचे की और खुदाई करवाई, तो उसे मोहरों से भरे कई घड़े मिले। महता की ईमानदारी से प्रभावित होकर उसने अपनी बहन का विवाह उससे कर दिया। महता ने विवाह में भी दहेज नहीं लिया और परिश्रम कर दिन बिताता रहा।

– शाहजहाँपुर
(उ. प्र.)

पहेलियाँ

पहेलियाँ

– डॉ. अलका जैन 'आराधना'

१) प्रथम कटे तो रात बनूँ मैं,
मध्य कटे तो बनती बात।
मेरे बिना हर शादी अधूरी,
रहती मैं दूल्हे के साथ।

२) श्वेत-श्याम मैदान में
सेना की है रेलमपेल।
राजा, वजीर, हाथी-घोड़े,
ऊँट और प्यादे से जमे ये खेल।

३) रंग-बिरंगे पंख मेरे,
साँप का हूँ मैं दुश्मन।
जम मैं नाचूँ झूमकर,
खिल उठे सब उपवन।

४) रहती सबकी ठोकर में,
आकार मेरा है गोल।
दुनिया में सबसे लोकप्रिय,
जल्दी से नाम मेरा बोल।

५) आकार है मेरा विशाल,
कम पानी में करता गुजारा।
घर मेरे हैं रेतीले-धोरे,
जैसे थार और सहारा।

६) अपने वजन से कई गुना,
ज्यादा उठा सकती मैं भार
हर घर में अक्सर दिख जाती,
चलती बनाकर कतार।

७) सबको मैं रखता सुरक्षित,
चाहे हो बारिश या धूप
बच्चों बड़ों सभी को भाते,
रंग-बिरंगे मेरे रूप।

८) खड़े-खड़े मैं सो लेता,
पसंद है मुझे चने की दाल।
बारातों की रौनक मुझसे,
बड़ी तेज है मेरी चाल।

– जयपुर (राजस्थान)

भूल-भुलैया

क से कछुआ व कबूतर

– चाँद मोहम्मद घोटी
मेड़ता सिटी, नागौर (राज.)

कछुआ और कबूतर दोनों मित्र रास्ता भटक कर दूर-दूर चले गए हैं। प्रिय मित्रो! आप इन्हें सही रास्ते से पुनः मिलवा दीजिए।

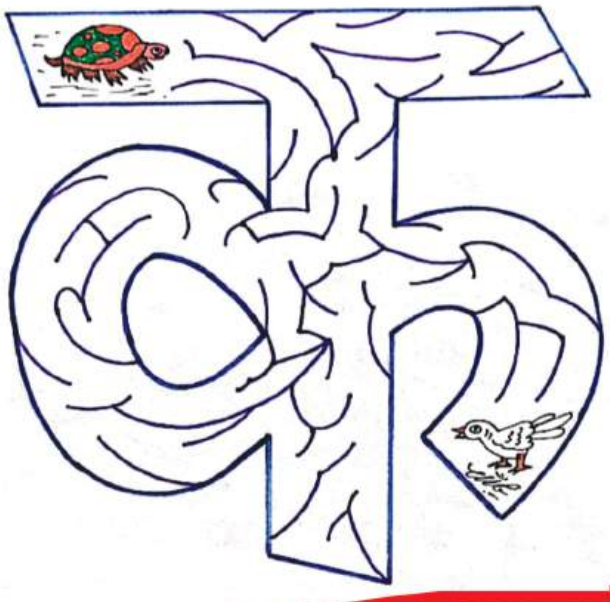

बाल वाटिका की राष्ट्रीय बाल साहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह

गुलाबपुरा। ०५-०६अक्टूबर २०२४ को श्री यज्ञदत्त नागर जी की स्मृति में **२१वीं सदी का बाल साहित्य : दशा एवं दिशा** केन्द्रीय विषय को लेकर बाल वाटिका के सम्पादक प्रो. भैरूँलालजी गर्ग के संयोजन एवं सह-सम्पादक श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' के सह-संयोजन में संगोष्ठी आयोजित हुई।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता 'देवपुत्र' के सम्पादक गोपाल माहेश्वरी ने की। मुख्य वक्ता डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' थे। सारस्वत उपस्थिति डॉ. शील कौशिक एवं श्री सत्यनारायण नागर की रही। मुख्य अतिथि श्री सत्यनारायण अग्रवाल रहे।

विभिन्न सत्रों में श्री अश्वनी कुमार पाठक, श्री भगवती प्रसाद गौतम, श्री राजा चौरसिया, श्रीमती किरण सिंह, श्रीमती आशा पाण्डे 'ओझा', डॉ. मोहम्मद साजिद खान, श्रीमती कुसुम अग्रवाल, इंजी. आशा शर्मा, श्रीमती नीना सिंह, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', श्रीमती विमला नागला, डॉ. मोहम्मद अरशद खान, श्री शिव मृदुल, उमेश चौरसिया, श्रीमती आशा पाण्डेय, श्रीमती उषा सोमानी ने बाल साहित्य की कविता, कहानी एवं उपन्यास विधाओं पर २१वीं सदी के सन्दर्भ से सार्थक विमर्श किया।

सम्मान समारोह रामस्नेही सम्प्रदाय के श्री अर्जुनराम जी महाराज के सान्निध्य में श्री भैरूँलाल जी गर्ग की अध्यक्षता व नगर विकास न्यास भीलवाड़ा के पूर्व अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण जी डाड के मुख्य आतिथ्य में हुआ। विशिष्ट अतिथि डॉ. लता अग्रवाल एवं श्री अरुण कुमार शर्मा व लोकेश नागला रहे।

इस अवसर पर देवेंद्र कुमार, दिल्ली को रु. ३१००० की राशि सहित जयप्रकाश भारती शिखर सम्मान, डॉ. मोहम्मद साजिद खान, शाहजहाँपुर को ३१००० की राशि सहित आनंद प्रकाश जैन शिखर सम्मान, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय', शाहजहाँपुर को २५००० की राशि सहित वैभव कालरा स्मृति बाल साहित्य रचनाकार सम्मान, श्री राजा चौरसिया, उमरिया पान (म. प्र.) को ११००० की राशि सहित कन्हैयालाल मत्त स्मृति बाल काव्य सम्मान तथा डॉ. शील कौशिक, सिरसा (हरियाणा) को ११००० की राशि सहित गंगादुलारी शुक्ला स्मृति बालसाहित्य रचनाकार सम्मान से सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त श्रीमती उषा सोमानी, चित्तौड़गढ़ (राज.), श्रीमती मीना सुब्बा, गंगटोक (सिक्किम), श्री दिनेश विजयवर्गीय, बूँदी (राज.), श्री बलदाऊ राम साहू, (छ. ग.), श्री आर. पी. सारस्वत, सहारनपुर (उ. प्र.) श्री कृष्णचंद्र महादेविया, (हि. प्र.), श्री बिरंची नारायण दास, कांताबांजी (उड़ीसा), श्री उमेश चौरसिया, अजमेर (राज.), इंजी. आशा शर्मा, बीकानेर (राज.) श्रीमती किरण सिंह, पटना (बिहार), डॉ. रमेशचंद्र गुप्त 'मिलन', मुंबई, डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद (उ. प्र.), श्री किरीट गोस्वामी, जामनगर (गुजरात) को ५१०० की राशि एवं स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

कविता

बचपन की बरबादी

– भाऊराव महंत

बहुत बड़ा है बस्ता मेरा,
पीठ मगर है छोटी।
किसी बुराई जैसी लगती,
मुझे पढ़ाई खोटी।।

रोज सवेरे जल्दी मुझको,
सोकर उठना पड़ता।
विद्यालय जाने को जल्दी,
घर से छूटना पड़ता।।

हड़बड़ में मैं कॉपी–पुस्तक,
भूल पेन जाता हूँ।
तब विद्यालय में शिक्षक से,
डाँट बहुत खाता हूँ।।

होमवर्क पर होमवर्क जब,
देते मुझको शिक्षक।
जिनको करते दुखने लगतीं
मेरी आँखें हैं थक।।

विद्यालय तो ठीक–ठाक पर,
ट्यूशन की बीमारी।
मुझे पढ़ाई की दुनिया यह,
लगती अत्याचारी।।

इसी पढ़ाई के कारण तो,
खेल नहीं मैं पाता।
सुबह–शाम दिनभर केवल मैं,
पढ़ने में रह जाता।।

सौ में सौ नंबर लाना है,
माँ–पापा कहते।
पढ़ते–पढ़ते तब आँखों से,
आँसू मेरे बहते।।

हे प्रभु! इस आजाद देश में,
कैसी ये आजादी?
रटने में ही हो जाती जब,
बचपन की बरबादी।।

– बटरमारा (म. प्र.)

दस रुपये का लाभ!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

अधूरी अभिलाषा

– मुग्धा पाण्डे

''अरे जूही! सुनो। अरे जूही! सुन नहीं रही, कहाँ हो जूही?'' आवाज देते हुए। इधर–उधर देखते और फिर ''जूही जूही।'' कहते खुशी के मारे तन्मय की आवाज खनक रही थी। फिर उसे याद आया कि छोटी बहन जूही को आजकल बगीचे में तितलियाँ देखने का शौक है। शायद वो दूर होने के कारण, उसकी आवाज ही नहीं सुन पाई होगी। ''जूही! तुम इधर हो।''

''बोलो तन्मय दादा! मैं सुन रही हूँ।'' ''अच्छा तो पहले क्यों नहीं बोली थी।'' ''सोचो तो तन्मय दादा यदि मैं बोलती तो सब तितलियाँ उड़ जातीं।'' ''अच्छा! तो क्या अब नहीं उड़ रहीं वो?'' ''अरे! अब तो उड़ना ही था। वो कुछ देर ही तो ठहरती हैं। अब बताओ ना दादा क्या कह रहे थे?'' ''अरे! ऐसी कमाल की बात है जूही कि तुम खुशी से उछल पड़ोगी।'' ''अरे! अच्छा! ऐसी बात है। तो पहले मुझे सोचने दो। क्या बात हो सकती है।'' ''अरे! कहीं बंदरों ने मेरी शाला ले जाने वाली पानी की बॉटल तो वापस नहीं कर दी।'' जूही चहकती हुई बोली तो तन्मय बोला– ''अरे! तुम भी ना जूही बस सात वर्ष की हो और बच्चों जैसी बातें करती हो।''

''तो अब मैं जब तीन वर्ष बाद दस वर्ष की हो जाऊँगी तो आप जैसी बातें कर सकूँगी ना। पर तन्मय दादा! तब तो आप तेरह वर्ष के हो जाओगे और फिर मैं तब भी ऐसी छोटी ही तो लगूँगी ना?'' जूही को अपने छोटे होने का अनुभव हो रहा था।

''किन्तु मेरा उत्तर तो अभी तक नहीं आया जूही।'' ''हाँ हाँ, सोच रही हूँ सोच रही हूँ। अच्छा, आपने जो कागज के डब्बे अनार के अमरूद के पेड़ की शाखा पर टिकाये थे उनमें चिड़ियाँ ने अंडे दे दिये हैं ना।'' ''नहीं! बाबा! ये भी नहीं...।'' ''नहीं तो, तो फिर अब तो आप बता ही दो।'' ''अरे! अवि और शुभि आ रहे हैं, अपने गाँव।'' ''क्या कहा अवि भैया और शुभि दीदी?'' जूही को तो विश्वास ही नहीं हो रहा था। ''हाँ, हाँ! मैंने अभी सुना मामाजी का फोन था। माँ से बात हो रही थी कि और आवाज साफ सुनाई दे रही हम लोग जल्दी ही आने वाले हैं।'' तन्मय ने गुलाब के फूलों की महक को लंबी सांस से अनुभव करते हुए कहा, ''अच्छा! पर भैया हमारे गाँव में उनको क्या अच्छा लगेगा।?''

''क्यों नहीं जूही! अरे पर अपने गाँव में तो एक से बढ़कर एक चीजें हैं है ना। कुआँ है, झरना है, नदी है, बगीचे हैं, गाय और बछड़ा है उनके मुंबई के छोटे से घर में ये सब नहीं है।'' ''क्या पता तनमय दादा मैं तो कभी भी मुंबई नहीं गई।'' ''हाँ, वैसे तो, मैं भी नहीं गया जूही! वास्तव में मामा–मामीजी ने कभी बुलाया ही नहीं। बस एक दो बार उनसे फोन पर बात हुई थी। तब अवि को गाँव पर एक लंबा निबंध लिखना था। तब उसने मुझसे काफी विस्तार से बात की थी और कहा था कि गाँव आयेगा। पर उसके बाद कभी भी मिलना नहीं हुआ।'' तन्मय की बात

पूरी हुई तो जूही बोली– ''हम्म! सही कहा भैया! आपसे तो छोटे हैं अवि भैया और दीदी। आपने सहायता कर दी तो अच्छा किया ना भैया!''

''हाँ जूही! हम ताजे फल पेड़ से तोड़कर ही खिलायेंगे।'' ''अच्छा! ठीक है दादा और मैं उनको तितलियाँ देखने का तरीका बता दूँगी। पर वो हमारे इतने साधारण से घर में परेशान तो नहीं होंगे तन्मय दादा?''

अब जूही को चिंता होने लगी थी। ''अरे! अरे! कैसे? ये तुमने क्या कह दिया जूही?'' ''हाँ दादा! मुझे माँ ने बताया था कि उनके तो अपने ही अलग–अलग कमरे हैं। और उनमें हर चीज बहुत कीमती हैं।'' ''हाँ, ये तो तुमने सही कहा पर जूही। ऐसा कुछ होता नहीं है। कोई घर बहुत साधारण भी कितना आराम देता है। अपने शाला के चपरासी रामेश्वर काका का घर याद है ना उन्होंने अपने बेटे राघव के जन्मदिन पर सबको बुलाया था कितना अच्छा लगा था उनके घर पर। मन करता था कि जरा–सी देर और रुक जाते तो...।'' अभी तन्मय बोल ही रहा था कि सामने से राघव आता हुआ। ''अरे राघव!

आओ।'' ''तन्मय भैया! जूही दीदी! आप कल हमारे घर पर आना।'' ''अरे! कल क्यों? तुम्हारे जन्मदिन को तो अभी आठ महीने बाकी हैं।'' ''अरे! वो नहीं, वास्तव में हमारी गाय ने बछड़ा दिया है और बिल्ली ने भी बच्चे दिये हैं, उनके नाम रखने हैं। तो आप दोनों कल रविवार को हमारे घर आना। आपको खीर और पूड़ी भी खानी है।'' राघव की बात जैसे ही पूरी हुई तन्मय एकदम से बोला ''अरे! राघव वास्तव में हम नहीं आ सकते।'' ''नहीं आ सकते! क्यों? आपको जानवरों से प्यार नहीं?''राघव ने प्रश्न किया। ''अरे! ऐसा नहीं है हमारे मामा के बच्चे मुंबई से यहाँ गाँव आ रहे हैं हमको तैयारी करनी है।''

''ओह! अच्छा पर आप फिर बाद में तो आना पर नाम तो आपको ही रखने हैं।'' ''अच्छा राघव! हम तुमसे जल्दी मिलते हैं।'' कहकर जूही और तन्मय बगीचे से घर में चले गये और अपना कमरा ठीक करने लगे। वो दोनों खुशी से एक–एक कोना साफ कर रहे थे ताकि उनके अतिथि प्रसन्न रहें।

तभी माँ कमरे में आती है और बताती है कि– ''अवि और शुभि नहीं आ रहे।'' ''अरे! पर माँ! आपकी तो बात हुई थी।'' ''हाँ बच्चो! आज रात आने वाले हैं वो गाँव के निकट एक महँगे रिसॉर्ट में रुकने वाले हैं और उनके साथ उनके काफी मित्र हैं।'' ''अच्छा!'' वो दोनों कुछ उदास हो गए। ''और वो कह रहे हैं कि यदि आप लोग चाहो तो वहाँ आ जाओ मिलने।'' यह सुनकर जूही और तन्मय को अजीब–सा लगा। ''खैर कोई बात नहीं! हमने अपना कमरा तो खूब चकाचक साफ कर लिया है ना जूही!'' तन्मय ने कहा तो जूही ने हामी भरी।

''चलो, हम लोग एक कागज और पेन लेकर राघव के लिए नाम सोचते हैं और बंदरों को भगाने के लिये पुराने डब्बे का आवाज वाला खिलौना भी बनाना है दादा।'' ''हाँ जूही। हमारे पास तो समय ही नहीं।'' कहकर वो दोनों राघव के बारे में खूब सारी बातें करने लगे।

– नई दिल्ली

पानी

– वैभव कोठारी

उष्णता बढ़ी। सागर का खारा जल गर्म हुआ। वाष्प बनी। मेघ ने जन्म लिया। प्यास से व्याकुल धरा पर अमृत की बूँदें बरसने लगीं। कुछ ही समय में चारों दिशाओं में जल ही जल दिखाई देने लगा। मुरझाए वृक्ष पुन: तरो–ताजा होने लगे। मयूर नृत्य करने लगे। किसान मुस्कुराने लगा।

सीमेंट से बने पक्के घर हैं। पक्के आँगन। सड़कें भी पक्की हैं। सड़कों के किनारें की भूमि भी पक्की। नालियाँ भी पक्की। सड़क पर पानी भरा है। नालियों से बहकर पानी नाले में जा मिलता है। नाले का पानी किसी छोटी नदी में। छोटी नदी, बड़ी नदी में और बड़ी नदी सागर में मिल जाती है।

पानी तेजी से बह रहा है। मैं, इस बहते हुए जल को देख रहा हूँ। बरसात समाप्त होगी और ये जल मेरी आँखों से ओझल हो जायेगा। तभी मुझे लगा कि ये बहता हुआ जल, मुझे चिढ़ा रहा है। नहीं नहीं.... ये मेरा भ्रम होगा, जल मुझे क्यों चिढ़ायेगा भला?... मैं, अपने मन को समझा ही रहा था, कि तभी... बहते जल में से आवाज आयी– ''मैं बहकर जा रहा हूँ, सागर में पुन: समा जाने... फिर से खारा हो जाने। मुझे रोक सको, तो रोक लो! सहेज सको तो सहेज लो।''

मैं सोचने लगा– ''इतना पानी! इतना पानी! सहेजूँ भी तो कहाँ? पूरे मोहल्ले क्या, पूरे शहर के बर्तन भी ले आऊँ तो वो भी कम पड़ेंगे।''

मेरी चिन्ता को अज्ञात शक्ति ने शायद ताड़ लिया था। पानी में से फिर वही आवाज आयी– ''चिन्ता मत कर! इसका हल मैं तुझे बताता हूँ। इस पृथ्वी के भीतर बहुत बड़ी टंकी है... बहुत बड़ी। बारिश के जल को उसमें

पहुँचाओ। अपने घर, कार्यालय, शैक्षणिक संस्थानों, गोडाउन, खेल के मैदान, बगीचे आदि में सोकपिट बनाकर ऐसा किया जा सकता है।

और यदि सोकपिट नहीं बना सकते तो पेड़ लगाकर भी वर्षा जल भूमि में पहुँचाया जा सकता है। पेड़, जल को, भूमि के भीतर और जलस्रोतों तक पहुँचाने में सहायता करते हैं।

बातों ही बातों में १०० वर्ष आगे पहुँच गया। वर्ष २१२४ में... जहाँ एक बच्चा अपने दादाजी से प्रश्न पूछ रहा है– ''दादाजी! ये वर्षा ऋतु क्या होती है? कैसी होती है? मैंने तो कभी वर्षा ऋतु देखी ही नहीं।

इंजीनियर दादाजी! अपने पोते की जिज्ञासा को शांत करने के लिये एक मॉडल बनाते हैं। एक प्लास्टिक के पाईप में एक शॉवर लगाते हैं। वर्षों से बेकार पड़ा टुल्लू पम्प उसमें जोड़ते हैं। अपनी बहू से कहते हैं– ''बहू! थोड़ा पानी लाना, इस मॉडल से बारिश करके दिखानी है।''

यह सुनकर बहू कहती है– ''पानी नहीं है, पिताजी! पानी के दो पाउच रखे हैं, ब्लेक में खरीदे हैं। कल सुबह तक चलाना है। हो सकता है कल भी पानी न मिले।'' यह सुनकर दादाजी उदास हो जाते हैं।

पोता फिर बोल पड़ता है– ''दादाजी! जब वर्षा होती थी तो आप क्या करते थे? आपने थोड़ा–सा पानी मेरे लिये सुरक्षित क्यों नहीं कर लिया?''

अपने पोते के प्रश्न सुनकर दादाजी मौन हो जाते हैं और अपना ऑक्सीजन–मास्क पहन लेते हैं। दूसरा मास्क अपने पोते को पहना देते हैं।

– खण्डवा (म. प्र.)

आपकी पाती

आदरणीय संपादक महोदय, सादर नमन। देवपुत्र पत्रिका का सितंबर अंक साभार मिला। 'अपनी बात' में 'स्वस्थ' शब्द के माध्यम से विविध विषयों का सुंदर विवेचन किया है। 'स्व का गौरव' के प्रति रागात्मकता बढ़ाने हेतु आपका उद्‌बोधन सुप्रेरक लगा। 'हिंदी' शीर्षक से श्री प्रभुदयाल श्रीवास्तव की कविता सामयिक एवं सारगर्भित है। कहानियाँ संदेशप्रद हैं। 'आलेख' और 'जानकारी' के अन्तर्गत हिंदी के विषय में प्रस्तुतियाँ अच्छी लगीं। 'गणनायक की सीख' और 'बाल विनोबा' बाल नाटकों ने विशेष प्रभावित किया। 'बालसाहित्य की धरोहर' नामक स्तंभ में डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' जी द्वारा प्रतिमास बालसाहित्य के भूले–बिसरे बाल साहित्यकारों से परिचय कराया जा रहा है। यह अत्यंत गौरवपूर्ण और सार्थक आयोजन है। इसके लिए डॉ. संजय के साथ आपकी श्रम निष्ठा स्तुत्य है। इस संदर्भ में आदरणीय डॉ. संजय और आपसे विनम्र निवेदन है कि इस स्तंभ के आधार पर एक ग्रंथ तैयार करने की कृपा करें, जो निश्चित रूप से बालसाहित्य की एक मूल्यवान धरोहर होगी।

'देवपुत्र' का प्रत्येक अंक विशिष्ट होता है। यह बालकों के लिए ही नहीं, अपितु बालसाहित्य साधकों को भी संजीवनी प्रदान करता है। एतदर्थ आपको हार्दिक साधुवाद।

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
लखनऊ (उ. प्र.)

मटमैला पानी

– रजनीकांत शुक्ल

वह दस बारह लोगों का झुण्ड था जो सारे के सारे युवा थे। और उस समय जबलपुर में नर्मदा नदी के जिलहरी घाट की ओर बढ़े चले जा रहे थे। सबके सब प्रसन्न थे। वह मंगलवार का दिन उन्होंने मिलकर खेलने नहाने और पिकनिक मनाने के लिए तय कर रखा था। यह वर्ष २००१ के सितम्बर महीने की छः तारीख की बात थी।

जिलेहरी घाट के पास पहुँचकर वे सारे वहीं नर्मदा से लगे हुए मैदान में खेलने लगे। जबलपुर में नर्मदा नदी के तट पर जिलेहरी घाट की बनी भगवान शिव की पिंडी व मूर्ति के दर्शन के लिए बहुत दूर–दूर से लोग आते हैं। यहाँ नर्मदा के तट पर अनेक आश्रम भी बने हुए हैं।

उस समय वे सभी नौजवान नर्मदा के तट पर मैदान में आपस में खेल रहे थे। खेलते–खेलते उनमें से तीन युवक राजेश कुरील, चमन कोरी और अमित कुमार असावधानीवश नर्मदा के पानी की ओर चले गए और उसमें फिसलकर गिर गए। जहाँ पर वे जाकर गिरे थे वहाँ पर नर्मदा की गहराई लगभग पच्चीस से तीस फुट थी।

उन तीनों के अचानक इस तरह नर्मदा में गिर जाने से उनके साथ आए सारे साथी सन्न रह गए। वे जहाँ पर गिरे थे वह स्थान अत्यन्त खतरनाक था। कोई उसमें कूदकर उनकी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालने की हिम्मत नहीं कर सका। असहाय होकर वे चारों ओर सहायता के लिए पुकारने लगे।

किन्तु वहाँ उस समय उनकी सहायता करने के लिए कोई नहीं आया। उनके आँखों के सामने उनके साथी नर्मदा में समाए जा रहे थे और वे सब चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। अपनी इस लाचारी पर उस समय उन्हें रोना आ रहा था। तभी नर्मदा में नाव पर बैठे एक ग्यारह वर्ष के लड़के रिंकू बर्मन ने इन लोगों की इस करुण पुकार को सुना। उसने तुरन्त संकेत किया कि मैं जा रहा हूँ बचाने और फिर तेजी से उन डूबते लोगों को बचाने के लिए नाव को लेकर चल पड़ा।

वह शीघ्रता से उस ओर चल दिया जिधर वे तीनों युवक जिन्दगी बचाने के लिए मौत से संघर्ष कर रहे थे। जब उन तीनों ने एक लड़के को नाव लेकर उन्हें बचाने के लिए अपनी ओर आते देखा तो उनकी आँखों में आशा की किरणें लहराने लगीं। वे अपनी जगह पर स्थिर नहीं थे बल्कि उन्हें इस बीच नर्मदा की लहरें अपने साथ कुछ आगे तक ले जा चुकीं थीं।

यद्यपि इससे पहले उन तीनों डूबने वालों की अपने साथियों से कोई सहायता ने मिलने से हिम्मत टूट चुकी थी। नाव लेकर अपनी तरफ आने वाले लड़के को

देखकर उन्हें लगा कि अब संभवत: उनकी जान बच जाएगी। जैसे–तैसे हाथ–पाँव मारकर वे अभी तक स्वयं को पानी में डूबने से बचाए हुए था। जबकि उनके चारों ओर नर्मदा के जल का विस्तार उनके मन में भय की सिहरन पैदा कर रहा था।

शीघ्र ही रिंकू बर्मन अपनी नाव के साथ उनके पास तक जा पहुँचा। यद्यपि इस बीच उन तीनों को एक–एक पल भारी हो रहा था। रिंकू ने नाव को किनारे पर किया और सामने आए चमन कोरी को नाव के ऊपर चढ़ने का प्रयास किया। किन्तु डूबते को तिनके का सहारा की तरह, बजाय आराम से चढ़ने के वह एकदम से नाव पर झपट पड़ा।

जिससे नाव पलटते–पलटते बची। इस तरह से चढ़ाने से नाव के डूबने का खतरा पैदा हो गया लेकिन

रिंकू ने समझदारी से काम लेते हुए नाव को थोड़ा झुकाव देकर एकदम से आगे की ओर बढ़ा दिया। जिससे चमन के पूरी तरह झपट्टे की पकड़ में आने से उस समय नाव बच गई फिर रिंकू नाव घुमाकर चमन के पास ले आया और इस बार रिंकू ने चमन को समझाते हुए कोशिश की और सावधानीपूर्वक उसे नाव पर चढ़ा लिया।

अब उसने इसी तरह समझदारी दिखाते हुए दूसरे युवक अमित कुमार को भी नाव पर चढ़ाया। उन दोनों को बचा लेने के बाद अब उसने अपना ध्यान तीसरे युवक राजेश कुरील की जान बचाने की ओर लगाया। उसने पलटकर देखा तो वह उसे कहीं भी दिखा नहीं।

नर्मदा का पानी वहाँ पर साफ नहीं था वह मटमैला था। रिंकू ने खूब नजरें गड़ाकर देखा किन्तु उसे न तो कोई हलचल होती दिखाई दी और न ही राजेश कुरील के शरीर का कोई भी भाग दिखाई दिया जिससे वह उसे पहचान पाता।

रिंकू ने उन दोनों लोगों से भी कहा– जरा देखो तुम्हारा तीसरा साथी कहीं नजर आ रहा है। किन्तु वे दोनों भी राजेश को ढूँढ पाने में असमर्थ रहे। केवल नर्मदा का मटमैला पानी अपनी गति से बहता चला जा रहा था।

निराश–हताश रिंकू उन दोनों को लेकर किनारे की ओर चल पड़ा। उसे दु:ख हो रहा था कि वह उनके तीसरे साथी को क्यों नहीं बचा सका। घाट पर किनारे पहुँचकर सभी लोगों ने उसे हाथों हाथ लिया।

उसकी इस तात्कालिक सूझबूझ और साहस से दो युवकों की प्राणरक्षा हो गई थी। रिंकू बर्मन को घर वहीं घाट के पास था। सभी के द्वारा उसका अभिनंदन किया गया और समाचार–पत्रों में घटना का विवरण छपा।

एक ग्यारह वर्ष के छोटे बच्चे ने बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए दो युवकों की नर्मदा नदी में डूबने से जान बचाई। रिंकू का नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। उसे देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के द्वारा वर्ष २००२ का राष्ट्रीय बाल

वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

नन्हे मित्रो!

नन्हे हाथ हमारे लेकिन नभ को छू आते।
छोटे पैर हमारे लेकिन मंजिल तक जाते।
संकट हो कैसा भी लेकिन हम कब घबराते,
गम से रहते दूर, गीत खुशियों के हम गाते।।

– नई दिल्ली

कविता

पेड़ अगर चलते–फिरते तो

– शैलेन्द्र सरस्वती

पेड़ अगर चलते–फिरते तो,
वे दुनिया की सैर को जाते।
अपनी चुप–चुप सी भाषा में,
नाच–नाच कर गाना गाते।

पेड़ अगर चलते–फिरते तो,
पढ़ने फिर जाते स्कूल।
डाली में बस्ता लटकाए,
बैठते वे छोटी स्टूल।

पेड़ अगर चलते–फिरते तो,
खाना खाने जाते होटल।
खाना खा के अपने फलों से,
बिल चुकता कर देते टोटल।

पेड़ अगर चलते–फिरते तो,
पुस्तकालय जा कर पढ़ते।
कहानियों का मजा उठाते,
चुटकुलों पर जी भर हँसते।

पेड़ अगर चलते–फिरते तो,
कोना–कोना हरा बनाते।
जहाँ देखते वायु–प्रदूषण,
वहाँ पहुँच कर उसे भगाते।

– बीकानेर
(राजस्थान)

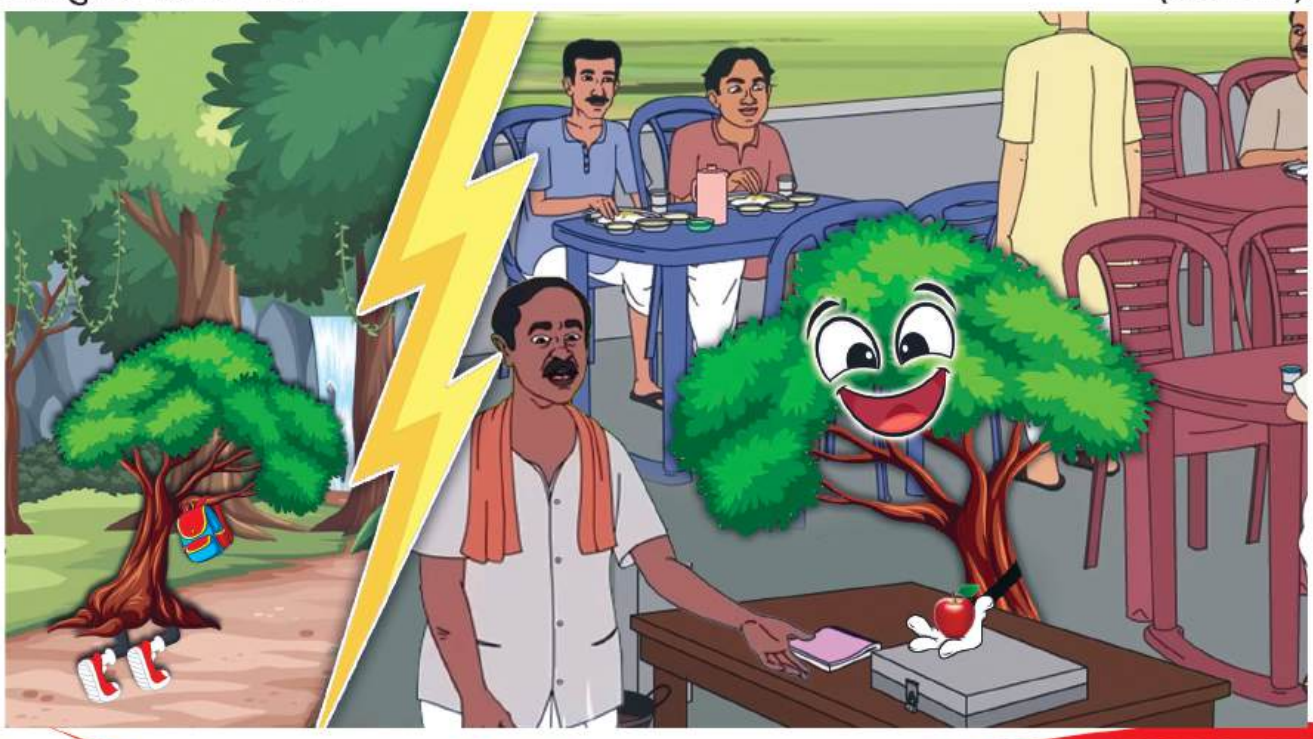

फैसला

चित्रकथा-

अरे रामदीन, तुम्हें तो मैंने तीन दिन पहले खांसी की दवा दी थी न?..
खों खों
..क्या वह तुमने पी ली थी?
जी नहीं वैद्यजी, मैंने उसे बस चखा था...
और यह फैसला किया..
..कि उस कड़वी जहरनुमा दवा से तो खांसी ज्यादा अच्छी है..

पंचतंत्र की कथाएँ

– शिवम सिंह

साथियो! पंचतंत्र की कथाएँ बच्चों को लुभाती और शिक्षा देती आई हैं। दुनिया भर की अनेक भाषाओं में पंचतंत्र का अनुवाद हुआ है। भारतीय डाक विभाग में पंचतंत्र की कहानियों को डाक टिकट के माध्यम से रुचि जगाने का प्रयत्न किया गया था। पंचतंत्र की कहानियों को डाक टिकटों का एक सेट जारी किया था ताकि आम लोग भी पंचतंत्र की कहानियाँ जान सकें।

बाल साहित्य के संसार में पंचतंत्र एक शाश्वत श्रेष्ठ कृति है। इसकी रचना का श्रेय मुख्यत: एक प्रतिभा सम्पन्न आचार्य विष्णु शर्मा को जाता है। पंचतंत्र की कथाएँ संभवत: लगभग ५०० ईस्वी में मूलत: संस्कृत में लिपिबद्ध की गई थीं। पंच का अर्थ है पाँच तथा तंत्र से अभिप्राय आचरण सिद्धांतों अथवा कर्म–विधाओं से है। जनश्रुति के अनुसार, किसी राजा के तीन मूर्ख पुत्र थे। उसने उन्हें सुधारने तथा आगे चलकर गुणवान युवक बनाने के प्रयोजन से विष्णु शर्मा को नियुक्त किया था। गुरु ने कपोल कल्पित कथा–कहानियों का संसार रचकर इस उद्देश्य को पूरा किया जिसमें पांच तंत्र अर्थात् विश्वास, वैभव–सृजन, गंभीर प्रयास, मैत्री तथा ज्ञान अंतर्निहित हैं जिन्हें पंचतंत्र में कथा कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

पहली डाक टिकट में एक बंदर और एक मगरमच्छ की मैत्री कथा है। इनकी मैत्री में तब विकार उत्पन्न हो गया जब मगरमच्छ अपनी लालची पत्नी के दुष्प्रभाव का शिकार हो गया।

मगरमच्छ की पत्नी ने उसे यह विश्वास दिलाया कि वह बीमार है और केवल किसी बंदर का कलेजा खाकर ही उसकी प्राण रक्षा हो सकती है। घर पर दावत देने के बहाने मगरमच्छ बंदर को अपनी पीठ पर बैठाकर नदी में उतर गया, लेकिन बीच नदी में पहुँचने पर उसने बंदर को सच्चाई बता दी। बंदर ने अपना धैर्य नहीं खोया और कहा कि वह अपना कलेजा नदी के किनारे एक वृक्ष पर सुरक्षित रखता है और यदि मगरमच्छ की पत्नी को उसकी आवश्यकता है, तो वह सहर्ष उसे दे देगा।

मूर्ख मगरमच्छ नदी तट की ओर वापस लौट पड़ा जहाँ बंदर उसकी पीठ से कूदकर सुरक्षित बच गया।

दूसरी कथा एक दम्भी किन्तु मूर्ख सिंह से संबंधित है जिसका अंत एक छोटे से चतुर खरगोश की बुद्धिमत्ता से हुआ। यह सिंह बिना सोचे–समझे जंगल के जानवरों को मार देता था। एक दिन जब खरगोश ने उसे जंगल में एक–दूसरे सिंह की उपस्थिति से अवगत कराया तो वह अपने प्रभाव क्षेत्र में अपने प्रतिद्वंदी की उपस्थिति सहन नहीं कर पाया और उसने उसे समाप्त करना चाहा।

खरगोश उसे एक कुएँ पर ले गया। जिसके जल में सिंह ने अपनी स्वयं की छवि देखी। अपनी छवि को देखकर उसे दूसरे सिंह के होने का भ्रम हुआ और वह कुएँ में कूद पड़ा और पानी में डूब गया।

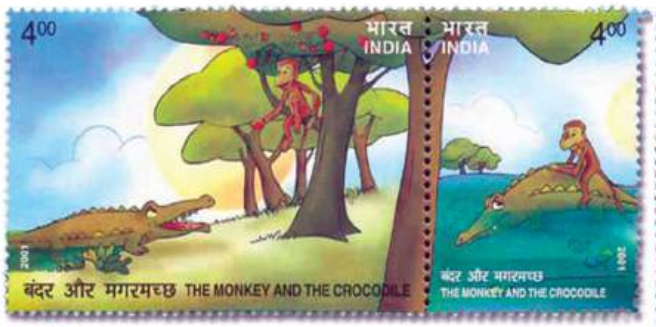

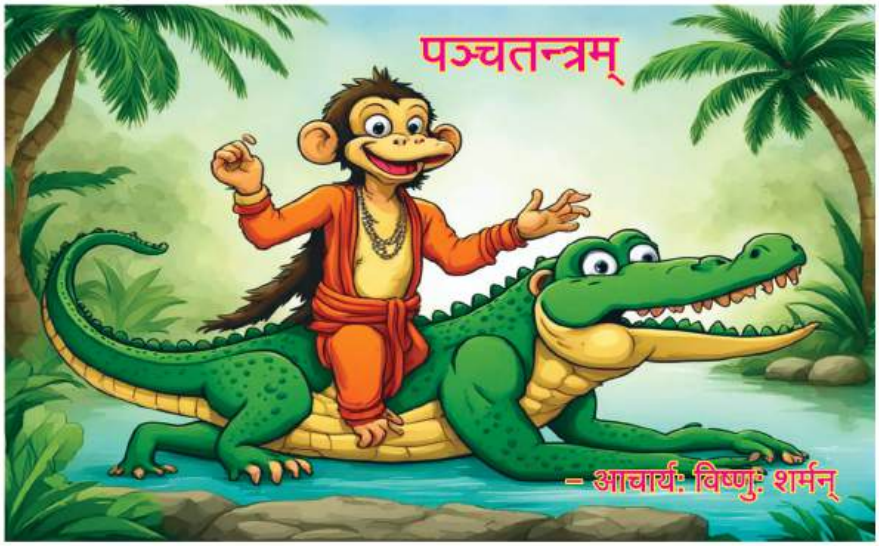

तीसरी डाक–टिकट में दो कौओं की कथा का निरूपण है जो एक सर्प के सामने असहाय थे। यह सर्प उनके बच्चों को खा जाता था। उन्होंने अपनी बुद्धि का प्रयोग कर इस संत्रास से मुक्ति पाई। कौवे निकटवर्ती गाँव से एक रत्नहार उठाकर ले आए और उसे सर्प की बगल में गिरा दिया। गाँव वालों को हार लेने के लिए पहले साँप को मारना पड़ा। इस प्रकार कौओं का जीवन सुखमय हो गया।

चौथी डाक–टिकट में एक मूर्ख कछुए की कहानी को चित्रात्मक अभिव्यक्ति दी गई है जिसकी इच्छा उड़ने की थी। उसकी इस इच्छा को दो हँसों ने पूरा किया जो उसके मित्र थे। हँसों ने एक लकड़ी अपने चोंचों के बीच दबाई और कछुआ उसे अपने दाँतों से पकड़कर लटक गया। लेकिन उड़ान के दौरान वह भूल गया कि उसकी स्थिति कितनी जोखिमपूर्ण है और कुछ बोलने के लिए जैसे ही उसने अपना मुँह खोला, लकड़ी पर उसकी पकड़ समाप्त हो गई और वह नीचे गिरकर मर गया।

बाल साहित्य की अपेक्षाएँ और गुण प्रौढ़ साहित्य से उसी तरह भिन्न हैं जिस प्रकार कोई बच्चा अपनी प्रकृति और संवेदनशीलता में किसी प्रौढ़ से अलग होता है। ऐसी कोई काल्पनिक कहानी जिससे बच्चे का मनोरंजन होता है और जो उसकी कल्पना शक्ति को विकसित करती है, निश्चित रूप से उसके साथ तत्काल तारतम्य बिठा लेती है।

इसके साथ–साथ अच्छा साहित्य बच्चे को कुछ न कुछ शिक्षा भी देता है जो किसी न किसी रूप में समाज के नियमों को समझने में बच्चे की सहायता करता है। जिसमें वह रहता है।

पंचतंत्र में ये सभी गुण सन्निहित हैं। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इसकी कहानियाँ आज के बच्चों को भी उतना ही प्रभावित करती हैं जितनी वह कई सदियों पूर्व विष्णु शर्मा के शिष्यों को प्रभावित करती थीं।

डाक विभाग पंचतंत्र की चार कथाओं को चित्रित करने वाले डाक–टिकटों का एक सेट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करा रहा है।

– कानपुर देहात (उ. प्र.)

पुत्र का जन्म

– अरविन्द जवळेकर

(गतांक से आगे)

१७४५ ईस्वी में देपालपुर में अहिल्याबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नामकरण मालेराव किया गया। सारे राज्य में प्रसन्नता छा गई। तीन वर्ष बाद १७४८ में उन्होंने एक पुत्री मुक्ताबाई को जन्म दिया। राज्य में फिर उल्लास छा गया।

पति का निधन

राजस्थान और उत्तर भारत की सारी रियासतें मराठा साम्राज्य के अंतर्गत आती थीं। प्रतिवर्ष उनसे चौथ (कर) वसूल कर उसे पेशवा को भेजने का दायित्व होळकरों का था।

कई बार कुछ राज–घराने चौथ चुकाने में आनाकानी करते थे। इस कारण कई बार मल्हारराव को वसूली के लिए उनसे युद्ध भी करना पड़ते थे।

ऐसे ही एक अभियान के दौरान ईस्वी सन् १७५४ में जब मल्हारराव, राघोबा पेशवा के साथ चौथ की वसूली हेतु अपने पुत्र खंडेराव को साथ लेकर राजपूताना गए थे। तब अधिकांश राजाओं ने तो उन्हें बिना किसी विवाद के चौथ की रकम चुका दी।

किन्तु भरतपुर के राजा सूरजमल जाट ने चौथ चुकाने से साफ मना कर दिया। जब चर्चा से बात नहीं बनी तब मजबूर होकर उन्हें भरतपुर पर चढ़ाई करनी पड़ी। मराठा फौजों ने कुंभेर के किले को घेर लिया।

सूरजमल और मल्हारराव की सेनाओं में युद्ध प्रारंभ हो गया। एक टुकड़ी का नेतृत्व खंडेराव कर रहे थे। जब वे किले में घुसने का प्रयास कर रहे थे तभी शत्रु सेना द्वारा चलाया गया एक तोप का गोला सनसनाते हुए आकर खंडेराव के सीने में लगा और वे गतप्राण होकर नीचे गिर पड़े।

प्रजा के लिए सती होने का विचार त्यागा

सैनिक खंडेराव को उठाकर शिविर में ले गए। मल्हारराव तथा राघोबा दादा भी तत्काल वहाँ आ पहुँचे। अहिल्याबाई भी शिविर में उपस्थित थीं। अहिल्याबाई और मल्हारराव के दु:ख की सीमा नहीं थी। दोनों अपनी सुधबुध खोकर विलाप कर रहे थे।

राघोबा दादा उन्हें सांत्वना देने का प्रयास कर रहे थे। जैसे ही खंडेराव की अंतिम यात्रा की तैयारी होने

लगी। अहिल्याबाई भी उस काल की परंपरा के अनुसार सती वेश धारण कर पति के साथ सती होने के लिए तैयार हो गईं।

यह देख मल्हारराव और भी दु:खी हो गए। उन्होंने अहिल्बाई से कहा– ''बेटी! हमारा बेटा तो चला गया, क्या तू भी हमें छोड़ जायेगी? फिर हमारी और हमारे राज्य और उसकी प्रजा की देखभाल कौन करेगा? मत जा बेटी! खंडू तो चला गया अब उसकी जगह तू ही हमारा बेटा है। इस राज्य को अब तुम्हें ही सम्हालना है। इस राज्य की प्रजा के लिए तो अपना निर्णय बदल दे।''

पिता तुल्य ससुर, मल्हारराव के दु:ख से पसीजकर और राज्य की प्रजा का विचार कर आखिर अहिल्याबाई सजी जाने का अपना निर्णय बदलने के लिए बाध्य हो गयीं।

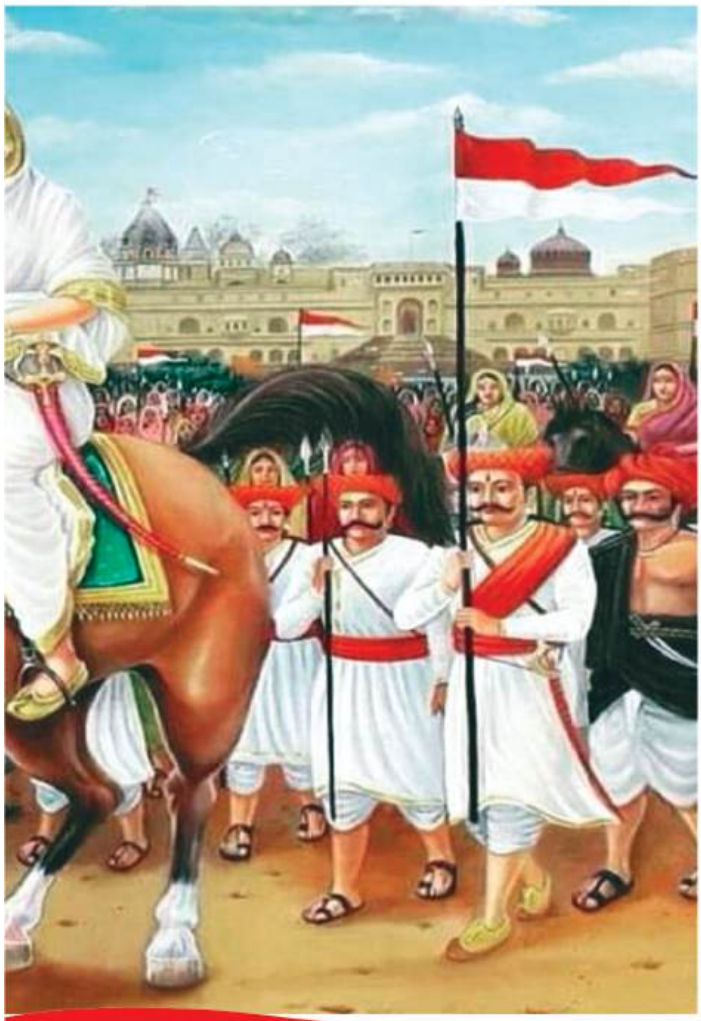

मल्हारराव होळकर मराठा सेनाओं के साथ निरंतर युद्ध अभियानों पर रहते थे। उनकी अनुपस्थिति में राजकाज सम्हालने की जिम्मेदारी अहिल्याबाई के पास रहती थी। जिसे वह अत्यंत कुशलतापूर्वक निभाती थी।

वह राज्य के प्रशासन का सुचारू संचालन करती, प्रजा की समस्याओं का निराकरण करती, उनके विवादों का निराकरण कर उन्हें न्याय प्रदान करती साथ ही युद्ध के मोर्चे पर अपने श्वसुर मल्हारराव जी की सेना के लिये रसद तथा गोला–बारूद भी भिजवाती थीं।

इसके लिए उन्होंने अस्त्र–शस्त्र तथा गोला–बारूद तैयार करने के कारखाने भी लगा रखे थे। इस प्रकार अल्य आयु में ही अहिल्याबाई राज–काज में निपुण हो गयी थीं और अपनी न्यायप्रियता के कारण प्रजा में भी लोकप्रिय हो गयी थी।

अचानक नियति ने उन पर एक और वज्राघात किया। एक युद्ध अभियान से लौटते समय उनके पितातुल्य श्वसुर श्री. मल्हारराव होळकर का आलमपुर में आकस्मिक निधन हो गया। अहिल्याबाई पर पुन: दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

इस दु:ख की घड़ी में भी अहिल्याबाई के मन में एक ही विचार था, अपनी प्रजा का भला कैसे हो। उन्होंने पेशवा से कहकर मल्हारराव के स्थान पर अपने पुत्र मालेराव को सुभेदार नियुक्त करवा दिया।

मालेराव बचपन से ही उद्दंड प्रवृत्ति का था। अहिल्याबाई का विचार था कि राज–काज की जिम्मेदारी मिलने पर मालेराव में गंभीरता आ जायेगी। किन्तु ऐसा नहीं हो सका।

इस कारण राजकाज की जिम्मेदारी अहिल्याबाई ही उठा रही थी। कुछ ही दिनों में बीमारी के कारण मालेराव का भी निधन हो गया।

(आगे की कथा अवश्य पढ़िए अगले अंक में।)

– इन्दौर (म. प्र.)

कहानी

पीले फूलों का चोर

– रोचिका अरुण शर्मा

राखी के पिताजी ने नया घर लिया था। इस प्रकार के खुले बरामदे वाले घर में राखी पहली बार रहने आयी थी। इसके पहले तो वह माचिस की डिब्बी जैसे बंद फ्लैट में ही रहा करती थी। इस नए घर के पिछवाड़े में राखी की माँ ने फूलों व सब्जियों के पौधे लगा दिए। रसोई की खिड़की भी पिछवाड़े में खुलती थी। खिड़की में प्लास्टिक की जाली लगी हुई थी। ताकि मच्छर, छिपकली आदि घर में न आयें।

पिछवाड़े में लगी तोरई की बेल रस्सी के सहारे चढ़ते हुए छज्जे तक जा पहुँची थी और बेल पर पीले रंग के फूल खिलने लगे थे।

राखी व उसकी माँ उन फूलों को देखकर खूब प्रसन्न होतीं और वे दोनों तोरई लगने की प्रतीक्षा करने लगीं थीं। लेकिन वे जब सवेरे पिछवाड़े में जातीं तो रोज कुछ पीले फूल गायब होते। नाजुक टहनियाँ भी तोड़कर फेंकी हुई मिलतीं।

एक दिन राखी के पिताजी शाम के समय बाजार से संतरे लाये। राखी की माँ ने संतरे धोये और रात को रसोई की खिड़की के पास रख दिए ताकि उन्हें थोड़ी हवा लगती रहे। सवेरे उन्होंने देखा कि खिड़की की प्लास्टिक की जाली कटी हुई है। वे समझ गयीं कि अवश्य इस घर के आस–पास में चूहे हैं। जो संतरे की खुशबू को सूंघ कर आये होंगे और जाली काट गए।

उन्होंने रात को चूहेदानी में घी लगी रोटी लटका कर उसे पिछवाड़े में रख दिया। सुबह उन्होंने देखा कि चूहेदानी में एक बड़ा मोटा–सा चूहा बंद था। राखी ने पहली बार इतना बड़ा–मोटा चूहा देखा था। उसे देखकर राखी के मन में बड़ा कौतूहल हुआ।

''लेकिन अब इस चूहे का क्या करेंगे हम?''

''इसे हम घर से थोड़ी दूर खुले मैदान में छोड़ देंगे ताकि यह वहाँ अपना बिल बना ले और हमारी रसोई की जाली कटने से बच जाए।''

''माँ! ऐसा भी तो हो सकता है कि यही चूहे तोरई के फूल भी चट कर जाते होंगे।''

''हाँ राखी! तुम्हारा अनुमान सही है, अब चूहा पकड़ा गया है तो शायद फूल भी चोरी नहीं होंगे।'' राखी की माँ ने राहत की साँस ली।''

लेकिन फूलों का गायब होना थमा ही नहीं।

''राखी शायद कुछ और भी चूहे होंगे जो अवसर पाकर दिन हो या रात तोरई के फूल खाते होंगे।'' माँ ने अनुमान लगाते हुए आँखें मटकाईं।

राखी रोज रात को चूहेदानी में रोटी लगाया करती लेकिन अब चूहे उसमें फँस ही नहीं रहे थे।

उसकी माँ ने समझाया कि– ''अब और चूहे होंगे

ही नहीं तो फसेंगे कैसे?''

''लेकिन फिर पीले फूल कौन चुरा रहा है?'' वह अपना सिर खुजाने लगी। हार कर उसने दिन में भी चूहेदानी में रोटी लगाकर रखना शुरू कर दिया। एक दोपहर वह बरामदे में बैठकर पुस्तक पढ़ रही थी। तभी पिछवाड़े से जोर से आवाज आयी ''खट्''।

उसे लगा जैसे यह तो चूहे दानी का दरवाजा बंद होने की आवाज है, सो उसने अनुमान लगाया कि अवश्य कोई मोटा चूहा फँसा होगा।

वह खुशी के मारे उछलती हुई पिछवाड़े में गयी। जब उसने चूहेदानी को देखा तो उसे खूब हँसी आयी।

''माँ! माँ! जल्दी पिछवाड़े में आओ माँ!''

''अरे! क्या हुआ कोई भूचाल आया है जो तुम इतनी तेज आवाज में मुझे पुकार रही हो?''

''हाँ माँ! आप भी देखेंगी तो हैरान हो जायेंगी।''

''ऐसा भी क्या गजब हो गया राखी! मुझे वहीं से बताओ न।'' ''गजब ही हो गया है माँ!''

राखी की माँ जल्दी से पिछवाड़े में पहुँची।

''माँ! चूहेदानी को देखो।''

राखी ने चूहेदानी की तरफ संकेत किया और वह स्वयं खी–खी कर हँसने लगी।

''अरे! यह गिलहरी चूहेदानी में कैसे आ गयी?''

''मैं आजकल मैं दिन में भी घी लगी रोटी चूहेदानी में लगाकर रख देती हूँ। ताकि यदि दिन में पीले फूलों का चोर आये तो पकड़ा जाए। आज देखो यह गिलहरी इसमें फँस गयी।''

''माँ! हो सकता है यही गिलहरी तोरई के फूल खाया करती हो और कुछ फूल एवं टहनियाँ तोड़कर फेंक भी देती हो। जिसके कारण तोरई बढ़ ही नहीं पाती।'' ''हम्म! यह भी संभव है।''

''माँ! अब हमें अपनी तोरई के फूल बचाने होंगे, वरना हमें एक भी तोरई नहीं मिलने वाली।''

''हम्म्म! बचाने तो हैं।'' माँ ने गरदन हिलाई।

''तो हम इस गिलहरी को भी बाहर खुले मैदान में छोड़ आते हैं। यह अपने भोजन की व्यवस्था कहीं ओर से कर लेगी उस चूहे की भाँति।''

''हाँ! तुम्हारा कहना भी उचित है।''

माँ की स्वीकृति मिलते ही राखी चूहेदानी लेकर मैदान की ओर बढ़ गयी।

अब कुछ दिनों में बेल पुन: पीले रंग के फूलों से भरी हुई दिखाई देने लगी थी। इन फूलों को देखकर कुछ कीट, तितलियाँ, भँवरे आदि भी उन पर मंडराने लगे। कुछ ही दिनों में लम्बी, पतली तोरइयाँ भी बढ़ती हुई दिखाई पड़ने लगीं।

अब राखी उत्सुकता से प्रतिक्षा कर रही थी कि कब तोरइयाँ पक कर तैयार हों और उसकी माँ उसे घर में लगी ताजा तोरइयों की सब्जी खिलाये।

– चेन्नई (तमिनाडू)

शाखा–चरित्र निर्माण की कार्यशाला

– नारायण चौहान

प्यारे बच्चो!

वन्देमातरम!

आज मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने प्रतिदिन प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले महत्वपूर्ण घटक शाखा के बारे से तुम्हें कुछ परिचय करवा रहा हूँ। भारत ही नहीं पूरे विश्व में मेरा विस्तार इस महत्वपूर्ण उपक्रम के कारण हुआ है।

मेरी शाखा छोटे–छोटे साधारण बच्चों में से असाधारण व्यक्तित्वों के निर्माण का केन्द्र हैं।

मेरी शाखा के बारे में आप लोगों ने एक बात अवश्य सुनी होगी यह साधारण एक मिलने का स्थान है परंतु यह साधारण स्थान नहीं यहाँ छोटे–छोटे बच्चे और बड़े भी राष्ट्रभक्ति की बातें सीखकर अपने विचारों को आदान प्रदान करते हैं और देश के लिए कुछ करने का मन बना लेते हैं।

मेरी शाखा पर बच्चे तरुण व प्रौढ़ कोई भी आ सकते हैं। किसी का किसी भी जाति का हो वह मेरी शाखा पर आ सकता है। किसी भी धर्म का हो वह मेरी शाखा पर आ सकता है। मेरे यहाँ संघ स्थान पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता।

जो भी मेरी शाखा पर आता उसका जीवन अनुशासन संस्कार और राष्ट्रीय चरित्र से पूर्ण हो जाता है। भारत की गौरवशाली विरासत और संस्कृति को स्मरण करने के लिए यहाँ विविध कार्यक्रम एवं अभ्यास होते हैं।

मेरी शाखा पर सभी के लिए अलग–अलग कौशल सिखाने वाले शिक्षक होते हैं। नियमित, व्यायाम योग आसन, गीत, कहानी, सुभाषित सुनाए जाते हैं। महापुरुषों के संस्मरण और कई सांस्कृतिक विषयों पर बौद्धिक (विषय केंद्रित भाषण) होते हैं।

मेरी शाखा में जो भी स्वयंसेवक आते हैं वह बिना व्यक्तिगत अपेक्षा के आते हैं। शाखा में हम देश के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने का मन बनाते हैं।

मेरी शाखा में आकर लोग खेलते हैं। गीत गाते हैं। चिंतन और मनन से जीवन को दिशा मिलती है। मेरी शाखा एक ऐसी पाठशाला है जहाँ अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से मेरी शाखा में आने वालों का सर्वांगीण विकास होता है।

शाखा में वर्षभर में समय–समय पर होने वाले छः उत्सवों से हमारे देश का गौरवशाली इतिहास महान परम्पराएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर समझने का अवसर मिलता है। मेरी एक घंटे की शाखा मेरे कार्य की आधारशिला है। मेरे स्वयंसेवक इसे संघ स्थान भी कहते हैं।

प्यारे बच्चो! मैं एक महत्वपूर्ण बात आपको बताता हूँ। ''शाखा एक ऐसा कल्पवृक्ष है इसकी छाया में जो भी आया समाज एक राष्ट्र के लिए जो चाहा उसे करने की सामर्थ्य को प्राप्त हुआ।''

– इन्दौर (म. प्र.)

महाराज से दूरी

– तपेश भौमिक

महाराज कृष्णचंद्र गोपाल को खूब चाहते थे। जिस दिन गोपाल दरबार में नहीं आते, उस दिन वे दरबार के काम–काज से उदास रहा करते थे। लेकिन कभी–कभी गोपाल के बड़–बोलेपन के कारण उस पर गुस्सा भी हो जाते थे। ऐसी ही एक कहानी....

एक दिन दरबार लगा हुआ था। गोपाल भी महाराज के पास ही बैठे हुए थे। किसी बात पर उन्होंने महाराज से जुबान लड़ा दी। इस पर महाराज गुस्से से आग बबूला हो गए।

''जानते हो! तुम्हारे और मेरे बीच कितनी दूरी है? जुबान लड़ाने से पहले अपनी हैसियत भी जान लिया करो।'' महाराज ने झल्लाकर कहा।

''जी हाँ महाराज! मैं अच्छी तरह आपके–मेरे बीच की दूरी जानता हूँ।'' गोपाल ने बड़े आराम से कहा।

''बताओ कितनी दूरी है?'' महाराज ने गुस्से से भरकर दाँत–पीसते हुए कहा।

''केवल साढ़े तीन हाथ।'' गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा। यह सुनते ही सारी सभा भौचक्की रह गई।

''सो कैसे?''

''देखिए मैं बताता हूँ।'' यह कहकर उसने एक रस्सी मँगवाई और उससे महाराज के सिंहासन से अपने आसन की दूरी नापी। फिर उसे अपने हाथ से नाप कर दिखा दिया। उतनी दूरी एकदम साढ़े तीन हाथ ही थी।

''महाराज! अब तो आपको विश्वास हो गया होगा।'' इतना कहना था कि सारी सभा हँसने लगी। महाराज ने भी ठठाकर हँसते हुए गोपाल को गले से लगा लिया।

मंदिर का कुत्ता

एक दिन गोपाल एक मंदिर में प्रवेश कर रहा था। उसके पीछे–पीछे एक कुत्ता भी आ रहा था।

पीछे से मंदिर के पंडित जी ने गोपाल को पुकार कर कहा– ''अरे! गोपाल तुम यह क्या कर रहे हो? मंदिर में कुत्ता लेकर प्रवेश करना मना है। क्या तुम्हें पता नहीं है?''

''कहाँ है कुत्ता?'' आश्चर्यचकित होकर गोपाल ने पूछा।

''वह रहा कुत्ता।'' पंडितजी ने गोपाल के पीछे जाते हुए कुत्ते की ओर अँगुली उठाकर कहा।

''यह मेरा कुत्ता नहीं है।'' गोपाल ने साफ–साफ अस्वीकार करते हुए कहा।

''तुम्हारा नहीं है, कैसे मान लूँ? यह तो तुम्हारे पीछे–पीछे ही आ रहा है।'' ब्राह्मण पंडित ने कहा।

''क्या बात करते हो पंडित जी! आप भी तो मेरे पीछे–पीछे आ रहे हैं।'' गोपाल ने मुस्कुरा कर कहा।

– (पश्चिम बंगाल)

बाल अधिकारों की महत्ता

– मीरा जैन

सृष्टि की सबसे सुंदर रचना है मनुष्य और मनुष्यों की दुनिया में भी जो सबसे सुंदर होता है वह है बचपन। इस बचपन को सुरक्षित एवं समृद्ध बनाने के लिए परिजन निरंतर प्रयासरत रहते हैं। तथापि हमारे संविधान में बाल अधिकार भी उल्लिखित हैं। बाल अधिकारों का मुख्य उद्देश्य बच्चों के समुचित विकास के साथ ही उन्हें शोषण से भी बचाना है यदि कहीं बालकों के अधिकारों का हनन होता है। तो उसके लिए न्याय की भी व्यवस्था है, ताकि बच्चे कभी भी स्वयं को असहाय अनुभव न करें। मुख्यत: बाल अधिकारों की आवश्यकता उन बच्चों को अधिक होती है जो निराश्रित हैं अर्थात् जिनका परिवार नहीं है, यदि है भी तो वह उस परिवार से दूर हो चुके होते हैं।

बाल अधिकारों की यदि विवेचना की जाए तो इनमें पाँच तत्व प्रमुख हैं–

शिक्षा– कोई भी बच्चा वह चाहे किसी भी धर्म अथवा जाति का हो उसे शिक्षा प्राप्त करने का संपूर्ण अधिकार प्राप्त है। किसी भी शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश लेने के लिए स्वतंत्र है और जहाँ तक पढ़ना चाहे वह पढ़ सकता है। कोई रोक–टोक नहीं कोई बंधन नहीं।

सुरक्षा– १८ वर्ष की आयु तक यदि बच्चा कोई गलती अथवा सामान्य अपराध करता है तब भी वह अपराधी नहीं माना जाता है। किसी गलती अथवा अपराध की श्रेणी का कृत्य यदि सिद्ध हो जाता है तब भी उसे संप्रेषण गृह में सुधार हेतु रखा जाता है। उसके लिए किसी भी प्रकार के दण्ड को प्रावधान नहीं है।

यदि कोई कृत्य ऐसा किया जो जघन्य अपराध की श्रेणी में आता है तब यह आयु घटकर १८ से १६ वर्ष हो जाती है। १८ वर्ष की आयु के पश्चात इनका आपराधिक अभिलेख नष्ट कर दिया जाता है ताकि उनके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग सदैव खुला रहे।

सहभागिता– बच्चा स्वेच्छा से किसी भी क्षेत्र– पारिवारिक, सामाजिक अथवा देश भक्ति आदि के कार्यक्रम में अपनी सामर्थ्यानुसार सहभागिता प्रदान करने हेतु स्वतंत्र है। सहभागिता करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि आप जो कुछ भी कर रहे हैं वह स्व के अतिरिक्त सर्वहित में भी हो। ऐसे कार्य में सहभागिता कतई ना करें जहाँ किसी के भी अहित की थोड़ी–सी भी संभावना हो।

जीने का अधिकार– बच्चा को अन्य व्यक्तियों की भाँति स्वतंत्र रूप से जीने का संपूर्ण अधिकार है। कोई भी व्यक्ति इसमें बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता है। इस हेतु कानून व्यवस्था भी बच्चे के साथ होती है।

व्यक्तित्व विकास– व्यक्तित्व विकास हेतु बच्चे खेलकूद, मनोरंजन, ड्राईंग–पेंटिंग आदि जिस भी क्षेत्र को अपनाना चाहें उन्हें पूरी स्वतंत्रता है। इसके लिए वे हर तरह के संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं।

परिवार में तो प्राय: बच्चों के अधिकार सुरक्षित हैं किन्तु निराश्रित बच्चों के अधिकार भी सुरक्षित रहें इसके लिए देश में अनेक बाल गृहों की स्थापना की गई है। जहाँ बच्चों के उक्त अधिकारों को सुरक्षित रखते हुए उनके शारीरिक तथा मानसिक विकास की समुचित व्यवस्था होती है। संप्रेक्षण गृह (सुधार गृह) में भी बिल्कुल बाल गृह की तरह ही व्यवस्था होती है। बच्चों के लिए संविधान तथा सरकार द्वारा इतनी व्यापक व्यवस्था का ध्येय मात्र इतना ही है कि बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो तथा ये आगे चलकर श्रेष्ठ नागरिक बने और स्वयं के साथ ही देश की उन्नति में अपना योगदान दें।

ऐसा नहीं कि बच्चे अपने अधिकार के प्रति ही सजग रहे उनमें कर्त्तव्य बोध भी बहुत आवश्यक हैं क्योंकि **अधिकार और कर्त्तव्य दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।** उत्तम एवं समुचित विकास, अधिकार के साथ कर्त्तव्यों पर भी आश्रित होता है वैसे तो लिखित कर्त्तव्यों का उल्लेख नहीं है किन्तु व्यावहारिक धरातल पर कर्त्तव्य स्वयंमेव ही निर्मित हो जाते हैं। यहाँ कर्त्तव्य से तात्पर्य बाल अधिकारों के दुरुपयोग से है। अर्थात् ऐसा ना हो कि बच्चों को संविधान ने जो अधिकार दिए हैं उसका सहारा लेकर वे कहीं अनुचित दिशा की ओर अग्रसर होने लगें।

उदाहरण स्वरूप बच्चों को सुरक्षा का अधिकार प्राप्त है तो मन में यह भाव कभी भी उत्पन्न नहीं होना चाहिए कि 'मैं कुछ भी करूँ कानून मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है।' ऐसे भाव निश्चित ही भविष्य को अंधकार की गर्त में ले जाएँगे।

अपने अधिकारों का सहारा लेकर दूसरे के अधिकारों का हनन करना, किसी को नुकसान पहुँचाना, गलत कार्य में संलग्न होना, समाज विरोधी, देश विरोधी कामों को करना जैसे कृत्य देश, समाज ही नहीं बल्कि स्वयं बच्चों के लिए भी घातक होते हैं। इसलिए हर बच्चे को चाहिए कि वह सदैव ऐसा कार्य करें जैसे स्वयं के साथ परिवार, समाज व देश का हित जुड़ा हो।

किसी के बहकावे में न आएँ। हमेशा अनीतिपूर्ण कार्यों से दूरी बनाये रखें। कई बार देखा गया है कि कुछ असामाजिक तत्व अपना उल्लू सीधा करने के लिए काननू विरोधी कार्य करवाने हेतु बहला फुसलाकर किशोरवय बच्चों का सहारा लेते हैं। ऐसे में सतर्कता बहुत आवश्यक है। किसी भी तरह की अनीतिपूर्ण बात का परिजनों, गुरुजनों अथवा संरक्षणकर्त्ता को जानकारी भी अवश्य देना चाहिए।

किशोरवय बच्चों को इस बात का ध्यान रखना ही चाहिए कि किशोर न्याय अधिनियम तथा अधिकार उनके हितों की रक्षा के लिए बनाए गए हैं भूलकर भी उनका दुरुपयोग न करें।

जिस तरह संविधान ने उनके हित सुरक्षित किए हैं ठीक उसी प्रकार बच्चों का भी नैतिक दायित्व बन जाता है कि अपने क्रियाकलापों से समाज व देशहित को सुरक्षित रखें।

– उज्जैन (म. प्र.)

अर्जुन का बारह वर्ष का वनवास

– मोहनलाल जोशी

एक ब्राह्मण था। कुछ चोरों ने उसकी गायें चुरा ली। ब्राह्मण सहायता के लिये राजमहल आया। वह जोर–जोर से रोने लगा। मेरी गायों को बचाओ।

अर्जुन ने ब्राह्मण की आवाज सुनी। अर्जुन के तीर–धनुष युधिष्ठिर के कक्ष में थे। उस समय द्रौपदी भी कक्ष में थी। अर्जुन कक्ष में चला गया। तीर–धनुष लेकर चोरों का पीछा किया। उसने तुरंत चोरों को पकड़ लिया। ब्राह्मण की गायें बच गईं।

अर्जुन ने युधिष्ठिर से कहा– ''बड़े भैया! आप और द्रौपदी कक्ष में थे। मैंने अन्दर आकर अपना ही बनाया हुआ नियम तोड़ दिया। मुझे बारह वर्ष का वनवास मिलना चाहिये। मुझे वनवास जाने की आज्ञा दो।'' युधिष्ठिर बहुत दु:खी हुए। उन्होंने कहा– ''तुमने जान–बूझकर नियम नहीं तोड़ा है। फिर भी अर्जुन अपनी बात पर अडिग रहा और बड़े भाई की अनुमति लेकर वन में चला गया।

अर्जुन का उलूपी से मिलन

अर्जुन वनवास के लिये निकल पड़ा। वह गंगाद्वार (हरिद्वार) पहुँचा। वहाँ पर उसकी भेंट उलूपी से हुई। उलूपी नागकन्या थी। उलूपी अर्जुन को नागलोक ले गई। नागलोक में सभी ओर पानी था। अर्जुन ने नागराज के महल में प्रवेश किया। अर्जुन ने एक स्थान पर अग्नि प्रज्वलित की। उसने अग्निहोत्र किया।

अर्जुन के पराक्रम से उलूपी मुग्ध थी। उसने अर्जुन से विवाह का प्रस्ताव रखा। अर्जुन ने कहा– ''मैं बारह वर्ष के वनवास पर हूँ। मैं स्त्री के पास नहीं जा सकता।''

नागराज ने कहा– ''तुम्हारा व्रत द्रौपदी के लिये है। तुम दूसरी स्त्री से विवाह कर सकते हो। उलूपी और अर्जुन का विवाह हो गया। उलूपी ने एक पुत्र को जन्म दिया। अर्जुन वनवास के निमित्त आगे बढ़ गये।

अर्जुन का चित्रांगदा से विवाह और अप्सराओं की शाप मुक्ति

गंगातट के बाद अर्जुन पूर्व दिशा में गया। वहाँ के तीर्थों के दर्शन किये। एक दिन अर्जुन मणिपुर पहुँचा। मणिपुर के राजा से मिला। मणिपुर के राजा के एक पुत्री थी। पुत्री का नाम चित्रांगदा था। अर्जुन का चित्रांगदा से विवाह हुआ। राजा का नियम था– उसकी पुत्री का पुत्र (दोहिता) राजा के पास ही रहेगा। अर्जुन के पुत्र हुआ।

अर्जुन ने चित्रांगदा और अपने पुत्र को मणिपुर में ही रखा। वहाँ से आगे दुर्गम तीर्थों के दर्शन करने निकल पड़ा। आगे एक जलकुण्ड था। वहाँ अनेक तीर्थ थे। परन्तु जलकुण्ड के पास कोई नहीं जाता था। जलकुण्ड में खतरनाक मगरमच्छ थे। अर्जुन उसी कुण्ड में गया। वे मादा मगरमच्छ इन्द्र की शापित अप्सराएँ थीं। अर्जुन ने उन्हें शाप से मुक्त कराया। अप्सराएँ स्वर्ग लोक चलीं गईं।

– बाड़मेर (राजस्थान)

नींद आ रही है!

चित्रकथा: देवांशु वत्स

छोटी कहानी

हार में छिपी जीत

– तरुण कुमार दाधीच

अनिता और रीता एक ही शाला में पढ़ती थीं। दोनों शाला की सांस्कृतिक गतिविधियों और खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेती थी। पहले स्थान पर कभी अनिता रहती तो कभी रीता। धीरे–धीरे रीता के मन में खटास आने लगी क्योंकि दो–तीन प्रतियोगिता में रीता पिछड़ गई और अनिता बाजी मार गई।

दोनों में बातचीत कम होने लगी। रीता अपनी सहेलियों के सामने अनिता की बुराइयाँ करने लगी। अनिता को पता चला तो उसे दुख हुआ। वह जानती थी कि यदि वह भी रीता की तरह करने लगेगी तो उसमें और रीता में क्या अंतर रह जाएगा।

दोनों को डर था कि कहीं इस बार भी वह पिछड़ न जाय। अनिता सोच रही थी जिसमें योग्यता होगी वह विजयी होगी।

एक दिन ग्रंथालय से निकलते हुए अनिता और रीता एक–दूसरे से टकरा गई। अनिता ने क्षमा माँगी लेकिन रीता बिना बोले मुँह फुलाकर वहाँ से जाने लगी। अनिता ने उसे आवाज लगाई।

''रीता! क्या बात है जो तुम मुझसे नाराज हो?'' अनिता ने सहजता से पूछा।

''हाँ नाराज हूँ। तुम मुझसे ऐसी मित्रता निभा रही हो? हर बार तुम पहले स्थान पर आ रही हो। मेरी सहायता करके तुम मुझे भी तो आगे बढ़ने में सहायता कर सकती हो।'' रीता ने मुँह फुलाकर कहा।

''तो यह गलतफहमी है कि मैं तुम्हें आगे बढ़ने से रोक रही हूँ।'' अनिता ने आश्चर्य से कहा।

''और नहीं तो क्या।'' रीता ने गुस्से में कहा।

''ऐसा नहीं है रीता। प्रतियोगिता में हम सभी भाग

लेते हैं। वहाँ कई प्रतियोगी होते हैं। वहाँ केवल मेरा और तुम्हारा ही सामना नहीं होता।'' अनिता ने प्रेम से कहा।

''लेकिन?'' रीता बोली।

''तुमने बस यह समझ लिया है कि प्रतिस्पर्धा हम दोनों के बीच में ही है। कोई भी जीते, इससे क्या अंतर पड़ता है? एक बात ध्यान रखो कि जीत जो जीत ही होती है लेकिन हार में हमेशा जीत छिपी रहती है। हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। लगन और निष्ठा से मेहनत करेंगे तो जीत मिलेगी।'' अनिता ने समझाते हुए कहा।

''वह कैसे?'' रीता ने आश्चर्य से पूछा।

''जब हम जीतते हैं तो हमें बहुत प्रसन्नता होती है लेकिन यह समझने का प्रयास नहीं करते हैं कि यदि आज हम पिछड़े हैं तो कल प्रथम आएँगे। यह हार ही तो हमें जीत दिलाती है। पगली हार में ही तो जीत छिपी है।'' अनिता ने प्यार से कहा।

''तुम ठीक कह रही हो अनता। क्षमा करना मैं ईर्ष्यावश इस बात को समझ नहीं सकी।'' रीता ने चेहरा झुकाए हुए कहा।

''अच्छा क्षमा किया। अब बताओ प्रतियोगिता की तैयारी कैसी चल रही है?'' अनिता ने पूछा।

''अच्छी चल रही है। पहले स्थान पर नहीं आई तो मुझे कोई दु:ख नहीं होगा क्योंकि अब मैं समझ गई हूँ कि हार में जीत छुपी हुई है।'' रीता ने हँसते हुए कहा।

''यही जीवन की सफलता का मूलमंत्र है।'' अनिता ने गंभीरता से कहा।

इस बार रीता वाद-विवाद प्रतियोगिता में पहले स्थान पर रही। उसे जीवन की सफलता का मूल मंत्र मिल चुका था। अनिता ने उसे बधाई दी। आपसी भेदभाव भूलकर खुशी से झूमती हुई दोनों सहेलियाँ गले लग गईं।

– उदयपुर (राजस्थान)

कविता

आओ नाव बनाना सीखें

– पंकज जुगनू

आओ नाव बनाना सीखें
बहुत ध्यान से सुने व देखें
पहले लो कागज का टुकड़ा
चार कोन वाला हो मुखड़ा
पहले उसको लंबा मोड़ो
अब उसका इक कोना पकड़ो
फिर दूजे कोने तक जकड़ो
बचे तीन में जोर जगाओ
यही प्रक्रिया फिर दोहराओ
छोटा-सा इक त्रिभुज बनेगा
और बीच में छेद दिखेगा
शीघ्र छेद को तुम फैलाओ
ऊपर-नीचे, बीच दबाओ
पकड़ के उसके दोनों सिरे
खींचें उसको धीरे-धीरे
बन जायेगी नाव सुहानी
छोड़ो उसको बहता पानी

– वर्धा (महाराष्ट्र)

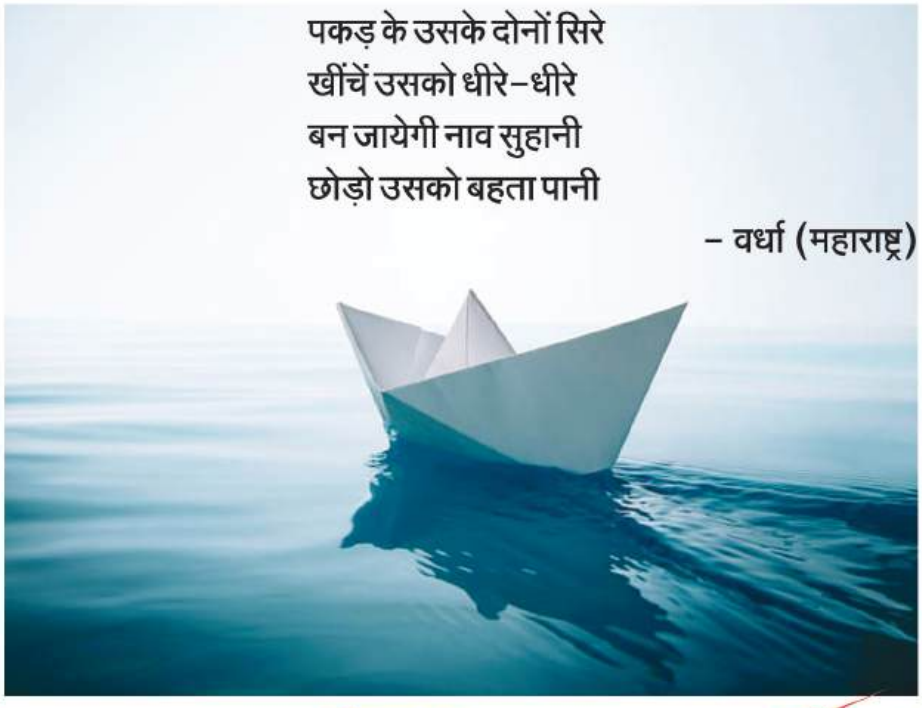

तारे कहाँ गए?

– शिखर चंद जैन

मधुबन में आमतौर पर शांति रहती है। लेकिन यहाँ की गुलाब कॉलोनी में हमेशा की तरह आज फिर हलचल मची हुई है। इस हलचल की वजह यह है कि जंगल में दो विद्यालय हैं और दोनों यहीं हैं।

सारे पढ़ने–लिखने वाले बच्चे दिन में यहीं उपस्थित होते हैं तो स्वाभाविक है कोलाहल तो रहेगा ही। आए दिन किसी न किसी बात पर बच्चे आपस में वाद–विवाद कर लेते हैं और फिर लड़ बैठते हैं।

आज भी छुट्टी के समय बच्चे आपस में खिटपिट कर बैठे। इन सबसे दूसरे जानवरों को तो कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता था क्योंकि वे इसके अभ्यस्त हो चुके थे। लेकिन कष्ट होता था बेचारे उन निशाचर प्राणियों को जो दिन में खूंटी तान कर सोते थे।

ओली उल्लू, फ्रॉगी मेंढक और चमकू चमगादड़ की नींद में व्यवधान पड़ गया। तीनों कान लगाकर सुनने लगे। पता चला कि आज बच्चों में चर्चा का विषय यह है कि तारे रात भर अँधेरे में खूब चमकते हैं, दमकते हैं, ठुमकते हैं और इधर–उधर मंडराते हुए दिखते हैं। पर सुबह इतना प्रकाश होने के बाद भी कहीं दूर–दूर तक नजर नहीं आते। आखिर जाते कहाँ हैं?

जंबो हाथी का बच्चा जेंगी बोल रहा था कि तारे फूलों की तरह होते हैं जो रोज सुबह तक पककर झड़ जाते हैं और रात को फिर से नए तारे उग जाते हैं।

लेकिन हिनहिन घोड़े का बच्चा हॉर्सी बोल रहा था कि जैसे हम दिन में शाला आ जाते हैं और शाम को अपने–अपने घर चले जाते हैं वैसे ही तारे भी अपने–अपने घर चले जाते हैं।

जेंगी और हॉर्सी की अलग–अलग टीमें बन चुकी थीं। दोनों ही टीमों के बच्चे अपने–अपने लीडर की बात का समर्थन करते हुए जिद बहस कर रहे थे और शोरगुल मचा रहे थे।

झगड़ा रुकने का नाम नहीं ले रहा था उन्हें किसी तरह शांत करके भगाने और अपनी नींद पूरी करने के लिए ओली उल्लू, फ्रॉगी मेंढक और चमकू चमगादड़ ने आपस में खुसुरफुसुर करते हुए कुछ बातें कीं।

फिर ओली उल्लू ने तीखी आवाज में कहा, सुनो! सुनो!! सुनो!!! बच्चो! हम तीनों प्राणी यानी मैं, फ्रॉकी काका और चमकू भैया रात भर जागते हैं। इसलिए हमें तारों के बारे में सब कुछ पता है।

तुम लोग अभी अपने–अपने घर जाओ और भोर में ४ बजे मधु तालाब के पास मिलना। हम तुम्हें वह दिखाएँगे कि तारे कहाँ जाते हैं।

उनकी बात सुनकर बच्चे शांत हो गए और अपने–अपने घर चले गए।

अल सुबह ओली, फ्रॉगी और चमकू मधु तालाब के किनारे पहुँच गए।

जैसा कि उन्हें आशा थी सारे बच्चे तो नहीं आए किन्तु कुछ उत्साही और उत्सुक बच्चे मधु तालाब के पास आ गए थे। बाकी बच्चे शायद अभी तक अपने घरों में मजे से सो रहे थे।

ओली उल्लू ने कहा, ''बच्चो! तालाब के पानी को जरा ध्यान से देखो।''

बच्चे पानी में ध्यान से देखने लगे। बोले, ''अरे! इसमें तो ढेर सारे तारे दिखाई दे रहे हैं।''

फ्रॉगी ने कहा– ''बस यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। भोर होने पर तारे यहाँ छिप जाते हैं।''

''किन्तु आसमान में बहुत सारे तारे दिखाई दे रहे हैं। वे क्यों नहीं आए?'' ची ची चिड़िया के बच्चे स्पैरो ने पूछा।

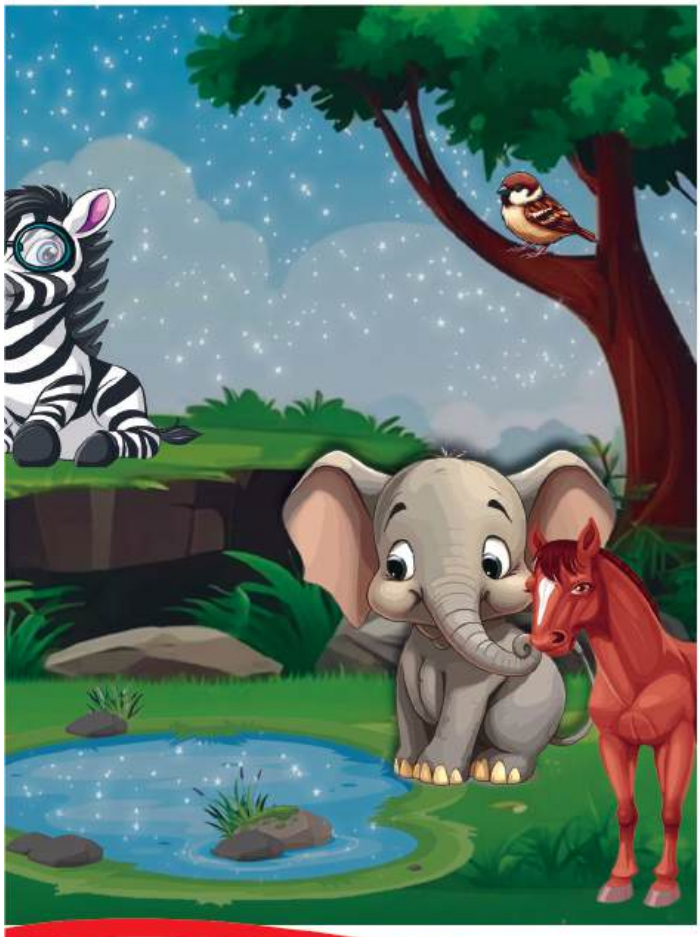

चमकू चमगादड़ ने कहा– ''बेटा! वे भी धीरे–धीरे आ जाएँगे। अब तुम सब अपने–अपने घर जाओ।

सभी बच्चे अपने–अपने घर की ओर चल दिए लेकिन कुछ बच्चों जैसे स्पैरो, जेंगी और हॉर्सी आदि तीनों निशाचरों की बातों से संतुष्ट नहीं थे। वे आपस में बातें करते हुए जा रहे थे।

तभी उन्हें विज्ञान के शिक्षक जेब्रा प्रसाद दिख गए। बच्चों ने उन्हें एक स्वर में सु–प्रभात कहा और पूछा– ''शिक्षक जी! आप इतनी सुबह–सुबह यहाँ कैसे?''

स्पैरो ने उन्हें सारा किस्सा बताया तो वे ठहाका मारकर हँस पड़े। बोले– ''बेटा! तारे कहीं नहीं जाते। आसमान में ही रहते हैं।

जरा सोचो किसी छोटे से कमरे में १००० वाट का बल्ब जल रहा हो और कोने में एक छोटा–सा दीपक जल रहा हो तो उस पर किसी की नजर पड़ेगी क्या? कुछ ऐसी ही तारों के ना दिखने ही वजह है।

तारे दिन में इसलिए दिखाई नहीं देते क्योंकि वे हमारी पृथ्वी से लाखों प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित हैं। सूरज का प्रखर प्रकाश इन तारों के प्रकाश से इतना अधिक होता है।

सितारों का प्रकाश हमारी आँखों तक पहुँच ही नहीं पाता। इसलिए हमें सूर्योदल के बाद दिन में तारे नहीं दिखते।

शिक्षक जी की बात ओली फ्रॉगी और चमकू ने भी सुन ली थी। शिक्षक जी ने उन्हें फटकारते हुए कहा– ''तुम्हें बच्चों को गलत जानकारी नहीं देनी चाहिए थी। तीनों शर्मिंदा होकर उनसे क्षमा माँगी और रफूचक्कर हो गए।

बच्चे भी अपनी उत्सुकता का सही उत्तर मिलने पर संतुष्ट होकर घर चले गए।

– कोलकाता
(पश्चिम बंगाल)

भारतीय बाल कल्याण संस्थान ने किया सम्मानित

कानपुर। भारतीय बाल कल्याण संस्थान ने जुगल देवी सरस्वती विद्या मंदिर में आयोजित ६३ वें सम्मान समारोह में डॉ. दर्शनसिंह आशट, पटियाला, उदय किरोला, अल्मोड़ा, संतकुमार वाजपेई, लखीमपुर खीरी, सृष्टि पांडेय, वाराणसी, रमेश मिश्र आनंद, प्रदीप अवस्थी, अशोक वाजपेई इत्यादि बाल साहित्य लेखकों को प्रशस्ति–पत्र, अंग वस्त्र और सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर कई पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया और स्थानीय रचनाकारों ने बाल कविताओं का पाठ किया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधायक भूधर नारायण मिश्र ने कहा कि बाल साहित्य सभ्य समाज की आधार भूमि है। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण का कार्य बाल कल्याण के अभाव में असंभव है।

मुख्य अतिथि गणेश गुप्त ने कहा कि बालकों तक बाल साहित्य पहुँचाना समाज का नैतिक दायित्व है। विशिष्य अतिथि रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत', नई दिल्ली ने अपने बाल साहित्य लेखन और डॉ. राष्ट्रबंधु जी के साथ अपने अनुभवों को साझा किया।

पंजाबी विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. राजवंत कौर ने कहा कि बाल साहित्य लिखने वालों में बच्चों जैसी जिस सरलता की अपेक्षा होती है, वह राष्ट्रबंधु जी में कूट–कूटकर भरी हुई थी। आयोजन में अनिता सेठिया, बैंगलूरू, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', शाहजहाँपुर, अजीत सिंह राठौर, शशि शुक्ला, मंजु श्रीवास्तव, रमेश मिश्र आनंद, भारत भूषण तिवारी, वीरेश वाजपेई इत्यादि की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

आभार प्रदर्शन संस्थान के महामंत्री एस. बी. शर्मा ने और कुशल संचालन चक्रधर शुक्ल ने किया।

पुस्तक परिचय

हमारे ज़मीन के सितारे

मूल्य– १६०/–

डॉ. शील कौशिक की इस पुस्तक में वैज्ञानिकों की प्रेरक जीवनियाँ प्रस्तुत हैं।

प्रकाशक– अद्विक पब्लिकेशन, ४१ हसनपुर, आय. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली–११००९२

दुनिया के नक़्शे नक़्शों की दुनिया

मूल्य– २५०/–

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. बानो सरताज की इस पुस्तक में दुनिया के अनेक नक़्शों का परिचय देते हुए नक़्शे समझने के सूत्र भी समझाए गए हैं।

प्रकाशक– के. के. पब्लिकेशन्स, ४८०६/२४, भरतराम रोड, दरियागंज नई दिल्ली–११०००२

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. आर. पी. सारस्वत की दो सुंदर काव्य कृतियाँ प्रकाशक – नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, एन १६७–१६८, पैरामाउण्ट ट्यूलिप दिल्ली रोड, सहारनपुर–२४७००१ (उ. प्र.)

चतुर मेमना और मूर्ख भेड़िया
मूल्य– १५०/–

इस पुस्तक में सारस्वत जी ने आप बच्चों के लिए आठ पद्य कथाएँ प्रस्तुत की हैं। पद्य कथाएँ यानी कहानी जो कविता में लिखी है। ये रोचक है मनोरंजक हैं और शिक्षाप्रद भी हैं।

छुट्टन है तैयार
मूल्य– १३०/–

सारस्वत जी की २४ बाल कविताओं की इस मनभावन पुस्तक की रचनाएँ आपको गुदगुदाएँगी, सिखाएँगी, समझाएँगी सरस शैली और सरल भाषा में रची श्रेष्ठ रचनाएँ हैं।

रोचक पहेलियाँ
मूल्य– १२०/–

श्री. गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' एक अनुभव सम्पन्न सरस बाल साहित्यकार हैं। इस बार वे आपके लिए मनोरंजक बौद्धिक खेल के रूप में पहेलियाँ लेकर प्रस्तुत हैं।

प्रकाशक– अभिराम प्रकाशन ६४५ ए/५७७ जानकी विहार कॉलोनी, जानकीपुरम्, लखनऊ–२२६०२१ (उ. प्र.)

पक्षियों के बालगीत
मूल्य– १५०/–

मानसी शर्मा नई पीढ़ी की सजग रचनाकार है। प्रस्तुत कृति में २९ पक्षियों का काव्यबद्ध परिचय हैं जो आपको अनेक अपरिचित पक्षियों से परिचय कराएगा और आपके ज्ञान को बढ़ाएगा।

प्रकाशक– नवकिरण प्रकाशन बिस्सों का चौक, बीकानेर (राज.)

रोचक एकांकी संग्रह
मूल्य– २००/–

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे बाल साहित्य जगत में उत्तरोत्तर प्रसिद्ध होता हस्ताक्षर है। अनेक विधाओं में बाल साहित्य रचने वाली डॉ. प्रीति ने इस पुस्तक से आपके लिए चार एकांकी संजोए हैं। जिन्हें पढ़कर आप मंचन भी करना चाहेंगे।

प्रकाशक– अस्मि प्रकाशन, भोपाल (म. प्र.)

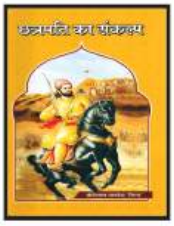

छत्रपति का संकल्प
मूल्य २००/–

श्री. छोटेलाल पाण्डेय 'विरथ' एक वयोवृद्ध रचनाकार हैं। राष्ट्रीय चरित्रों पर आपने अनेक रचनाएँ एवं पुस्तकों का सृजन किया है। इस बार आपकी लेखनी छत्रपति शिवाजी के दृढ़ संकल्प की झाँकी प्रस्तुत कर रही है।

प्रकाशक– अंशिका पब्लिकेशन, १०५ एफ/३, ओम गायत्री नगर, प्रयागराज–२ (उ. प्र.)

चप्पलें बोलीं धन्यवाद मुन्ना

– सुरेश सौरभ

मुन्ना की चप्पलें चलते–चलते बाजार पहुँची।

बाजार से नए–नए खिलौने खरीदे।

नए–नए तमाम कपड़े खरीदे।

तमाम खाने–पीने की सामग्री खरीदी, फिर लंबी यात्रा पर निकल पड़ी झूमते हुए।

तभी मुन्ना की नींद खुली।

वह आँखें मिलमिलाने लगा।

तब उसके पिताजी ने कहा– ''क्या हुआ बेटा...! क्या हुआ मुन्ना बेटा?''

मुन्ना बोला– चप्पल.. मेरी चप्पलें कहाँ हैं?

पिताजी ने धीरे से कहा– ''बेटा! चप्पलें तो चारपाई के नीचे रखी हैं। बेटा आज तुम्हारा जन्मदिन है। मैं तुम्हें ढेर सारा सामान लेकर दूँगा। जल्दी नहा–धोकर तैयार हो जाओ। नाश्ता करो। दोनों बाजार चलते हैं।''

मुन्ना ने चारपाई के नीचे ध्यान से देखा तो चप्पलें चुपके–चुपके शरारती लहजे में मुस्कुरा रही थीं।

मुन्ना बोला– ''तुम मेरे साथ जाने वाली हो न! इसलिए मुस्कुरा रही हो। खैर चिंता न करो। तुम मेरे साथ अवश्य जाओगी और मैं तुम्हें बढ़िया आराम से ले जाऊँगा। कूद–कूदकर तनिक भी परेशान न करूँगा।''

चप्पलें बोलीं– ''धन्यवाद! मुन्ना!''

– लखीमपुर खीरी (उ. प्र.)

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

छोटी कहानी

हम में भी जीवन हैं

– टीकम चन्दर ढोडरिया

संदेश अपने मित्रों के साथ नदी के पास स्थित मंदिर में दर्शन करने जा रहा था। संध्या का समय था। सूरज धीरे–धीरे अस्ताचल की ओर चलता जा रहा था। रास्ते में कई छोटे–बड़े उद्यान थे। जिनमें विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधे लगे हुए थे। उद्यान में एक अमरूद का पेड़ था, जिस पर बहुत सारे अमरूद लगे हुए थे। उसे देखकर सबका मन ललचा गया। उन्होंने आम तोड़ने का निश्चय किया। किसी को पेड़ पर चढ़ना तो आता नहीं था। सभी आस–पास पड़े पत्थरों को उठा–उठाकर पेड़ पर फेंकने लगे।

आवाज सुनकर उद्यान का माली दौड़ता हुआ आया। उसके हाथ में लकड़ी थी। वह जोर से चिल्लाया...। ''अरे! कौन है वहाँ... ठहरो तुम..।'' उसकी आवाज सुनकर सभी ने वहाँ से घर की ओर दौड़ लगायी। भागते–भागते रास्ते में संदेश का पैर एक पत्थर से टकरा गया। उसके अँगूठे पर चोंट लग गयी थी। खून निकलने लगा था। जैसे–तैसे सब अपने–अपने घर पहुँचे।

संदेश के अँगूठे की चोट देखकर उसकी माँ ने उससे पूछा तो उसने माँ को सब सच–सच बता दिया। माँ ने घाव की सफाई कर उस पर दवा लगाकर, पट्टी बाँध दी। चोट अधिक नहीं थी।

संदेश के पिताजी विज्ञान के अध्यापक थे। उनको जब इस घटना की सारी बात, संदेश की माँ ने बताई तो उन्होंने संदेश को अपने पास बुलाकर समझाया कि– ''बेटा! इस प्रकार बिना पूछे किसी के उद्यान में जाना अच्छी बात नहीं है।''

''आम खाने की इच्छा थी तो उसके मालिक से खरीद कर खाना चाहिए। चोरी करना तो और भी बुरी बात है।''

संदेश का सिर नीचे झुका हुआ था। सिर झुकाये ही उसने कहा– ''अब ऐसा नहीं करेंगे।''

उसके पिताजी ने उसे पास बैठाकर पूछा– ''अँगूठे में दर्द हो रहा है ना!'' ''हाँ बहुत हो रहा है...।'' संदेश बोला। ''जब तुम्हें इतना दर्द हो रहा है तो सोचो उस पेड़ को कितना दर्द हो रहा होगा जिस पर तुमने पत्थर मारे?''

''पेड़ के भी दर्द होता है क्या?'' आश्चर्य–चकित होकर संदेश ने कहा। उसके पिताजी ने उसे समझाया। ''हाँ, पेड़–पौधों के भी दर्द होता है। पेड़–पौधे हमें फल–फूल, अनाज, औषधियाँ, प्राण–वायु ऑक्सीजन आदि देते हैं। उनके बिना हमारा जीवन असंभव है। वह हमें जीवन देते हैं और उनमें भी जीवन होता है।'' उन्होंने आगे समझाया। ''भारतीय वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र बसु ने १० मई १९६१ को यह सिद्ध कर दिया था कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है। उन्होंने क्रेस्कोग्राफ यंत्र के माध्यम से पेड़–पौधे की प्रतिक्रिया रिकार्ड की थी। तापमान और रोशनी के बदलाव से वे प्रभावित होते हैं। उन्हें भी अन्य प्राणियों के समान सुख–दु:ख का अनुभव होता है।''

संदेश बड़े ध्यान से उनकी बात सुन रहा था। उसके पिताजी ने बताया कि ''वैज्ञानिकों ने अपने शोधों के माध्यम से यह भी सिद्ध किया है कि पेड़–पौधे अपनी जड़ों के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े रहकर अपनी संवेदनाओं का आदान–प्रदान करते हैं। किसी कवि ने कहा भी है –

ऊपर से हैं दूर वे, मिले भले ना पात।
जुड़े जड़ों से नित सखे, तरुवर करते बात।।

संदेश ने अपने पिताजी की बात सुनकर कहा– ''मुझे जरा–सी चोट से इतना दर्द हो रहा है। पेड़–पौधों को पत्थर मारने से अथवा काटने पर उनको कितना दर्द होता होगा? अब मैं किसी भी पेड़–पौधे को दु:ख नहीं पहुँचाऊँगा और नहीं किसी को पहुँचाने दूँगा।''

सुबह संदेश के पिताजी उसे उद्यान में ले गये। वहाँ माली बड़े प्रेम से पेड़–पौधों को पानी पिला रहा था। पेड़ों की डालियाँ हवा में झूम रही थी, फूल मुस्कुरा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सभी अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर कह रहे हों हम में भी जीवन हैं।

– छबड़ा, बारां (राजस्थान)

छ: अँगुल मुस्कान

एक मित्र दूसरे मित्र से – भाई! आजकल मुझे रात में भूख नहीं लगती और नींद नहीं आती है।

दूसरा मित्र– अरे! तो इसमें घबराने की क्या बात है? तुम दिन में खा–पीकर सो जाओ।

*****

दादी– बेटा! खाना खाएगा?

बिट्टू– नहीं।

दादी– मिठाई खाएगा?

बिट्टू– नहीं।

दादी– आइसक्रीम खाएगा?

बिट्टू– नहीं।

दादी– तब तो तू बिलकुल अपने बाप पर गया है। केवल मार ही खाएगा।

*****

सुरेश (रमेश से)– रमेश! मेरी दूर की नजर खराब है। चश्मा लेना पड़ेगा। खाना खाते हुए थाली में कंकड़ तक नहीं दिखते।

रमेश– वह ऊपर क्या चमक रहा है?

सुरेश– चाँद।

रमेश– थाली में पड़े कंकड़ नहीं दिखते जबकि रात में भी उतनी दूर देख रहा है, और कितनी दूर देखेगा?

प्रसंग

डॉ. विकास दवे एवं श्री उदय किरोला सम्मानित

सहारनपुर। नगर की सुपरिचित साहित्यिक संस्था 'समन्वय' द्वारा ३४वें 'सारस्वत एवं सृजन सम्मान समारोह' में देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

स्वामी रामतीर्थ केंद्र में 'गीतकार कृष्ण शलभ स्मृति सारस्वत सम्मान' से समादृत हुए प्रख्यात साहित्यकार एवं साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल के निदेशक डॉ. विकास दवे एवं संस्था के प्रथम 'नत्थीलाल सारस्वत एवं शांतिदेवी स्मृति बालसाहित्य गौरव सम्मान' से विभूषित अल्मोड़ा के प्रख्यात बाल साहित्यकार उदय किरौला को प्रदान किया। 'गीत साधिका इंदिरा गौड़ स्मृति सृजन सम्मान' से समाद्दत हुए गीतकार मनोज कुमार 'मनोज' एवं 'गीतकार राजेंद्र राजन स्मृति सृजन सम्मान' से प्रख्यात साहित्यकार एवं इतिहासज्ञ राजीव उपाध्याय 'यायावर' विभूषित किए गए। संस्था–सचिव डॉ. आर. पी. सारस्वत एवं उपाध्यक्ष विनोन भृंग ने संयुक्त रूप से समारोह का संचालन किया।

समाचार

जिद ही बनाती है सफल व्यक्तित्व–सी.ए. मुकेश राजपूत

विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के तत्वावधान में संरक्षित शिक्षा भारती एज्युकेशन सोसायटी रोहतक के अंतर्गत चलने वाले पाँच विद्यालयों के विद्यार्थियों व आचार्यों को प्रेरणा देने हेतु शिक्षा भारती वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गोहाना रोड में आज सी.ए. मुकेश राजपूत द्वारा प्रेरक व्याख्यान दिया गया।

मुख्य वक्ता सी.ए. श्री मुकेश राजपूत ने कहा कि अपने भविष्य के लिए सुनहरा सपना देखें और इस हेतु एक जिद का निर्माण करें। उस जिद को पूरा करने में अपने आपको पूरी तरह झोंक दें। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने व्याख्यान में सभी उपस्थित आचार्यों व विद्यार्थियों को बताया कि जीवन में सफल होने के लिए अपने देश के संविधान और विद्यालय के नियमों का पालन करना चाहिए। उन्होंने अपने स्वयं के जीवन के विभिन्न उदाहरण देते हुए विद्यार्थियों को सफल होने के सूत्र बताए तथा परिश्रम के महत्व को अपनी १०वीं कक्षा पास करने से लेकर सीए पास करने के संघर्ष की कहानी से समझाया।

उन्होंने बताया कि अनुशासन का पालन, मोबाइल का कम से कम प्रयोग, अपने सपनों के प्रति जागरूकता, स्वयं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना और किसी भी विषय को सही प्रकार से समझने के लिए आचार्य की बात को ध्यान से सुनना अति आवश्यक है, जिससे निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति आसानी से की जा सके।

स्वस्थ रोग मुक्त संतुष्ट व आनंदित जीवन के सूत्र

– डॉ. मनोहर भण्डारी

हाथों में विद्यमान परमात्मा के दर्शन करें– बिस्तर में ही अपने दोनों हाथों का दर्शन करें। भारतीय दर्शन के अनुसार हाथों में लक्ष्मीजी, सरस्वतीजी और भगवान गोविंद का वास है। ऋग्वेद और विष्णुपुराण के अनुसार हाथों में उपचारक शक्तियाँ होती हैं। नासा की वैज्ञानिक **बारबरा ब्रेनन** ने हाथों की उपचारक शक्तियों पर **हैंड्स ऑफ लाइट** नामक पुस्तक लिखी है और **स्टेफन को** और **एरिक बी रॉबिन्स**, एम.डी. की पुस्तक **योर हैंड्स केन हील यू** के अनुसार आप यदि श्रद्धा और पूर्ण विश्वास के साथ अपने रोगग्रस्त अंग को छूते हैं तो आप रोगमुक्त हो सकते हैं। सुबह–सुबह हाथों में रातभर की संचित शक्ति होती है। हाथों की उपचार शक्ति के बारे में **एविडेंस बेस्ड वैज्ञानिक** अध्ययन करने वाले **अल्बर्ट रोय डेविस** और **वाल्टर सी. रावल्स** ने अपनी पुस्तक **द रेनबो इन योर हैंड्स** में इसका उल्लेख किया है। **टच रिसर्च इंस्टीट्यूट** मियामी स्कूल ऑफ मेडिसिन के निदेशक **डॉ. टिफनी फील्ड** के अनुसार स्पर्श से फील गुड रसायन निकलते हैं, कॉर्टिसोल कम होता है, दर्द नाशक रसायन निकलते हैं और रोगप्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) सशक्त होती है।

प्रार्थना, आभार और क्षमा में छुपा है, उपाचार– बिस्तर पर लेटे–लेटे अथवा बैठकर भगवान से स्वस्थ, सुखी और उद्देश्यपूर्ण जीवन हेतु प्रार्थना करें। नोबेल विजेता फ्रेंच सर्जन **डॉ. एलेक्सिस कैरेल** ने अपनी पुस्तक **मैन द अननोन** में लिखा है कि प्रार्थना में अत्यधिक शक्तियाँ होती हैं, जो असाध्य रोगों से पीड़ित व्यक्ति को स्वस्थ कर सकती है। **फ्रेडरिक एलियास एंड्रयूज** नामक बालक को रीढ़ की हड्डियों की असाध्य टीबी हो गई थी, उसे लाइलाज घोषित कर दिया गया था, परन्तु वह प्रार्थना से पूर्णत: स्वस्थ हो गया और दीर्घायु

को प्राप्त हुआ। **ट्रेजरी ऑफ करेज एण्ड कॉन्फिडेंस** के लेखक **नॉर्मन विन्सेंट पॉल** के अनुसार नियमित प्रार्थना जीवन को स्वस्थ, पवित्र और सुखमय बनाती है। जीवन में ईश्वर, प्रकृति, जन्मभूमि, माता–पिता, गुरुजनों, मित्रों, पर्यावरण सहित जिन–जिन व्यक्तियों ने आपकी उन्नति आदि में प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग दिया हो, उन सभी का स्मरण करते हुए उनके प्रति मन ही मन आभार व्यक्त करें। **डॉ. राबर्ट इमेंस** ने अपनी पुस्तक **द न्यू साइंस ऑफ ग्रेटिट्यूड** में लिखा कि धन्यवाद के भाव से व्यक्ति तन, मन और भावनात्मक रूप से स्वस्थ होने लगता है। इसी तरह जिन व्यक्तियों के प्रति आपके द्वारा मन, वचन, कर्म से किसी प्रकार की अवमानना, अवज्ञा, अपमान हुआ हो, मन दुखा हो उन सभी से मन, वचन और कर्म से क्षमा माँगे। इन्टरनेशनल फॉरगिवनेस इंस्टीट्यूट के **डॉ. राबर्ट इनराइट** के अनुसार क्षमाशील लोग सुखी और स्वस्थ रहते हैं, तथा उन्हें बीमारियाँ भी कम होती हैं। स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी के **डॉ. फ्रेडरिक लस्किन** के अनुसार क्षमा करना और माँगना शक्तिशाली और सर्वश्रेष्ठ है, इससे शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा हृदय एवं तंत्रिका तन्त्र की कार्यक्षमता में भी वृद्धि होती है। इसलिए जैन दर्शन कहता है, **क्षमा वीरस्य भूषणम्**।

– इन्दौर (म. प्र.)

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम

* एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम, अपना पूरा नाम पता एवं व्हाट्सएप नंबर अवश्य लिखें।
* रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में लिखी या कम्प्यूटर पर टाइप की गई हो।
* प्रविष्टि संपादक देवपुत्र– ४०, संवाद नगर, इन्दौर–४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा या ईमेल– editordevputra@gmail.com पर (व्हाट्सएप पर नहीं) ३१ जनवरी २०२५ के पूर्व हमें अवश्य प्राप्त हो जाएँ।
* निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।
* पुस्तकों को छोड़कर सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार देवपुत्र के पास सुरक्षित रहेगा।
* कृपया रचनाओं के स्वरचित, स्वयं द्वारा अनूदित व मौलिक होने का स्वयं द्वारा प्रमाणित पत्र अवश्य भेजिए।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२४

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह प्रतियोगिता केवल बारहवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए है। बच्चे अपने किसी भी मन पसंद विषय पर अपनी स्वयं की बनाई हुई 'बाल कहानी' इस प्रतियोगिता के लिए भेज सकते हैं। इस प्रतियोगिता हेतु पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं–

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/–	११००/–	१०००/–	५००/–५००/–

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२४

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२४ से दिसम्बर २०२४ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल कविता की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कार हेतु प्रविष्टि स्वरूप कोई भी रचनाकार अपनी 'बाल कविता' की प्रकाशित कृति की ३ प्रतियाँ प्रेषित करें। पुरस्कृत कृति के रचनाकार को प्रमाण–पत्र सहित ५०००/– पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२४

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष **किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी में अनुवाद की गई बाल कहानी** विषय के रूप में निश्चित की गई है। पुरस्कार अनुवादक को प्रदान किया जाएगा। मूल कहानी के साथ आपकी एक सर्वश्रेष्ठ अनूदित बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप आमंत्रित है। पुरस्कार हैं–

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/–	१२००/–	१०००/–	५००/–५००/–

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२४

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु जनवरी २०२४ से दिसम्बर २०२४ के मध्य देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित पुस्तकों में से २१००/– का पुरस्कार निर्णायकों द्वारा चयनित किसी एक सर्वश्रेष्ठ कृति को प्रदान किया जाएगा।

कविता

खेल-खिलौने

– डॉ. अलका अग्रवाल

खेल खिलौनों का संसार,
बच्चों को आनंद अपार।

नन्ही गुड़िया, मोटा भालू,
छोटा गुड्डा, पिल्ला कालू।

पीं पीं पीं पीं बजता बाजा,
ढोल ढमा ढम, खेल तमाशा।

गुड़िया-गुड्डे, मंकी फॉक्स
किचन सेट और मेकअप बॉक्स।

शेर, हिरण, सारस और तोता,
तेज छलांग लगाता चीता।

रॉकेट, आस्ट्रोनॉट से प्रेम,
नए खिलौने, नए हैं गेम।

मोटरसाइकिल तेज दौड़ती,
कारों को पीछे है छोड़ती।

एरोप्लेन ऐसे उड़ जाता,
जैसे पायलट इसे चलाता।

अद्भुत हैं ये खेल-खिलौने,
सब बच्चों को लगे सलौने।

– जयपुर
(राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/१०/२०२४ | प्रेषण तिथि ३०/१०/२०२४ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

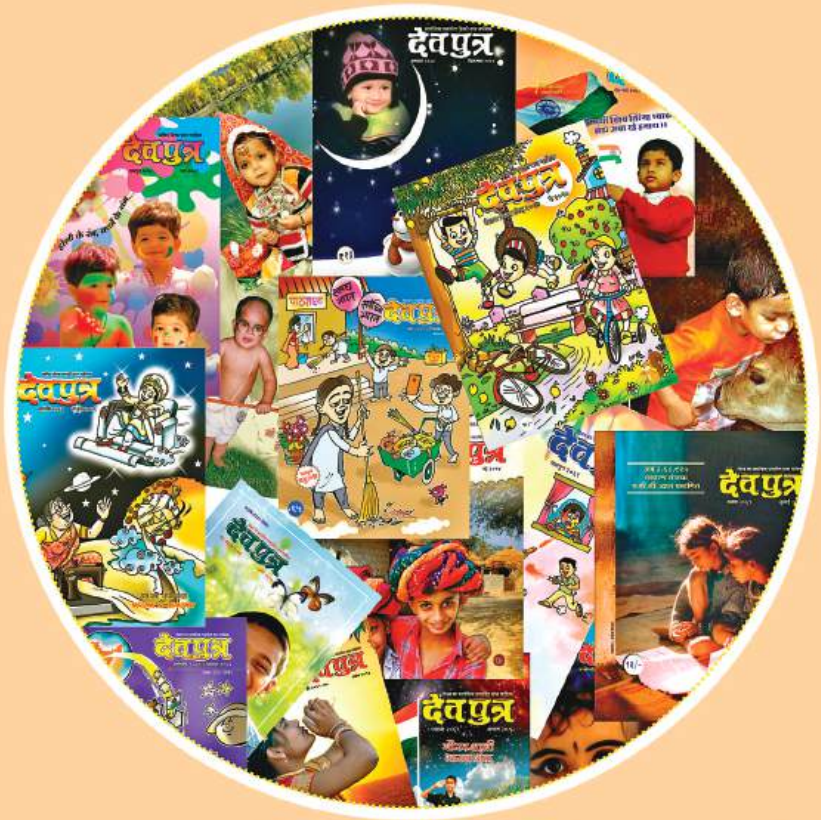

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल

'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी